Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक - 37

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

08 रबी उल् अव्वल , 1446 हिज्री कमरी, 14 तबूक 1403 हिज्री शम्सी, 12 सितम्बर 2024 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ج وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ لا وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ○

(सूरः इब्राहीम : **28**)

अनुवाद : अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए अटल कथनों के साथ संसारिक जीवन में और आख़रत में मज़बूती प्रदान करता है जबकि अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह ठहराता है। और अल्लाह जो चाहता है करता है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

इल्मी मजालिस की फ़ज़ीलत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम जन्नत के बाग़ों में से गुज़रो तो ख़ूब चरो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! जन्नत के बाग़ों से क्या मुराद है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इलम की मजालिस।

(अल् तरग़ीब वल् तरहीब लिल् मुंजरी, किताबुल् इल्म अल् तरग़ीब फ़ी मजालस ओलमा : 161)

अस्तग़फ़ार का महत्त्व

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने अस्तग़फ़ार को लाज़िम कर लिया तो अल्लाह तआला उसे हर ग़म और तकलीफ़ से निजात देगा, और हर तंगी से निकलने का रास्ता पैदा फ़र्मा देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अता फ़रमाएगा, जहां से उसे वहम-ओ-गुमान भी नहीं होगा।

(इब्ने माजा किताब अल् अदब बाब इस्तग़फ़ार)

दीनदार औरत से निकाह

हज़रत हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रिवायत की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फ़रमाया चार ग़रज़ों से औरत से निकाह किया जाता है। उसके माल की वजह से, उसके हसब नसब की वजह से, उसकी ख़ूबसूरती की वजह से और उसके दीनदारी की वजह से। दीन-दार औरत को ग़नीमत समझो।

(बुख़ारी किताबुल् निकाह, बाब अल् किफ़ा फ़ीद्दीन)

★ ★ ★

इन्सान को चाहिए कि औरतों के दिल में यह बात जमा दे कि वह कोई ऐसा काम जो दीन के ख़िलाफ़ हो कभी भी पसंद नहीं कर सकता
और साथ ही वह ऐसा जाबिर और सितम-शिआर नहीं कि उसकी किसी ग़लती पर भी चशमपोशी नहीं कर सकता

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हमारे हादी कामिल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ तुम में से बेहतर वह शख़्स है जिसका अपने अहल के साथ उम्दा सुलूक हो। बीवी के साथ जिसका उम्दा चाल चलन और मुआशरत अच्छी नहीं वह नेक कहाँ। दूसरों के साथ नेकी और भलाई तब कर सकता है। जब वह अपनी बीवी के साथ उम्दा सुलूक करता हो और उम्दा मुआशरत रखता हो। न यह कि हर अदना बात पर ज़िद-ओ-कोब करे। ऐसे वाक़ियात होते हैं कि कई बार एक ग़ुस्सा में भरा हुआ इन्सान बीवी से अदना सी बात पर नाराज़ हो कर उसको मारता है और किसी नाज़ुक मुक़ाम पर चोट लगी है और बीवी मर गई है इसलिए उनके वास्ते अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया हाँ अगर वह गलत काम करे तो सचेत करना ज़रूरी चीज़ है।

इन्सान को चाहिए कि औरतों के दिल में यह बात जमा दे कि वह कोई ऐसा काम जो दीन के ख़िलाफ़ हो कभी भी पसंद नहीं कर सकता और साथ ही वह ऐसा जाबिर और सितम-शिआर नहीं कि उसकी किसी ग़लती पर भी चशमपोशी नहीं कर सकता

पति औरत के लिए अल्लाह तआला का मज़हर होता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर अल्लाह तआला अपने सिवा किसी को सजदा करने का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने पति को सजदा करे। अतः मर्द में जलाली और जमाली दोनों रंग मौजूद होने चाहिएं। अगर पति औरत से कहे कि तू ईंटों का ढेर एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रख दे तो उस का हक़ नहीं है कि एतराज़ करे।

(मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 31, ऐडीशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ में इस बात की ओर तवज्जा दिलाई गई है कि एक मोमिन को अल्लाह तआला की तरफ़ से जिस क़दर ताक़तें और क़ुव्वतें मिली हुई हैं उस पर फ़र्ज़ है कि वह अपनी हर ताक़त को मानवता की भलाई के लिए खर्च करे
और केवल इस बात पर ख़ुश न हो जाए कि उसने रुपया दे दिया था या नमाज़ पढ़ ली थी या रोज़ा रख लिया था।

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः अल् हज आयत नम्बर : 36 "الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَا اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ" की तफ़सीर में फ़रमाते हैं इस जगह مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ में केवल रुपया ही शामिल नहीं कि इन्सान कुछ रुपय ख़ुदा तआला की राह में देकर अपने फ़र्ज़ को अदा करने वाला समझा जा सके बल्कि مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ में इस की आँखें भी शामिल हैं, उस का दिमाग़ भी शामिल है, उस के कान भी शामिल हैं, उसकी नाक भी शामिल है, उस के हाथ और पांव भी शामिल हैं, उस का धड़ भी शामिल है। फिर مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ में उसका मकान भी शामिल है। वह गंदुम भी शामिल है जो वह इस्तमाल करता है बल्कि वे मूलियाँ और गाजरें और गुड़ भी शामिल हैं जो ज़मींदार पैदा करता है। उस में कोई संदेह नहीं कि रुपया ख़र्च करके एक शख़्स माली क़ुर्बानी करने वाला क़रार पा सकता है लेकिन शरियत केवल माली क़ुर्बानी का हुक्म नहीं देती बल्कि शरियत यह कहती है कि हमने तुम्हें जो कुछ दिया है उसका एक हिस्सा तुम ख़ुदा तआला की राह में ख़र्च करो। अतः अगर कोई शख़्स अपनी सारी जायदाद भी चंदा में दे देता है लेकिन उसकी आँखें ख़ुदा तआला के

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

मुनाफिकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबय्य के बेटे रसूल के सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस ख़बर की वजह से जो आप अलैहि वसल्लम पहुंची है

अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे बाप को क़तल करने का इरादा रखते हैं तो मुझे हुक्म दें। अल्लाह की क़सम मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उस मज्लिस से खड़ा होने से पहले उस का सिर ले आऊँगा

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अब्दुल्लाह न मैंने उस के क़तल का इरादा किया है और न किसी को उसका हुक्म दिया है।

हम ज़रूर उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे जब तक वह हमारे मध्य है

हज़रत ज़ैद बिन अर्कम रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से (वह्यी नाज़िल होने की यह अवस्था) ख़त्म हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कान पकड़ा

और मैं अपनी सवारी पर था यह तक कि मैं अपने बैठने की जगह से उठ गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाने लगे हे लड़के तेरे कान ने वफ़ा की

और अल्लाह ने तेरी बात की तसदीक़ कर दी अर्थात वह्यी इसी बारे में थी

यहूदी विद्वान ज़ैद बिन लुसेत ने कहा मुझे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में संदेह था अब मैं गवाही देता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं।

मानो कि मैंने आज ही इस्लाम क़बूल किया है। इस वाक़िया के बाद वह कहता है कि अब मैं सच्चे तौर पर इस्लाम स्वीकार करता हूँ

जंग मुरेसी के हालात-ओ-वाक़ियात का वर्णन तथा बंगलादेश और पाकिस्तान के अहमदियों और फ़लस्तीन के मुस्लमानों के लिए दुआओं की तहरीक

श्रीमान डाक्टर ज़काउल् रहमान साहिब शहीद इब्न चौधरी अब्दुर्रहमान साहिब आफ़ लालामूसा गुजरात और श्रीमती सईदा बशीर साहिबा पत्नी मलिक बशीर अहमद साहिब का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 02 अगस्त 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जल्सा से पहले के ख़ुत्बात में जंग मरीसीअ के हवाले से वर्णन हो रहा था। इस बात का भी वर्णन हुआ था कि अब्दुल्लाह बिन उबय ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में ग़लत बातें कीं और मुनाफ़िक़ाना रवैय्या इख़्तेयार किया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में इस वाक़िया की तफ़सील से वर्णन करते हुए लिखा है कि "युद्ध समाप्त होने के बाद, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कुछ दिनों तक मरीसीय में रहे। लेकिन इसी दौरान मुनाफिकों ने एक ऐसी अप्रिय घटना घटाई जिससे लगभग कमज़ोर मुसलमानों में गृहयुद्ध की स्थिति पैदा हो जाती, लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की समय की समझ और आकर्षक व्यक्तित्व ने मुसलमानों को इस फितने के खतरनाक परिणामों से बचा लिया।

घटना यह हुई कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के एक नौकर, जिसका नाम जहजा था, मरीसीय के स्थानीय कुएं से पानी लेने गया। संयोग से, उसी समय एक अन्य व्यक्ति, सिनान नामक, जो अंसार के सहयोगियों में से था, पानी लेने के लिए वहां पहुंचा। ये दोनों व्यक्ति अज्ञानी और आम लोगों में से थे। कुएं पर ये दोनों व्यक्ति आपस में झगड़ पड़े और जहजा ने सिनान को एक थप्पड़ मारा। बस फिर क्या था, सिनान जोर-जोर से चिल्लाने लगा कि हे अंसार के समूह! मेरी मदद करो, मैं पीटा गया हूँ। जब जहजा ने देखा कि सिनान ने अपनी कौम को बुलाया है, तो उसने भी अपनी कौम के लोगों को पुकारना शुरू कर दिया कि हे मुहाजेरिन! भागो दौड़ो। जिन अंसार और मुहाजिरों के कानों में यह आवाज पहुंची, वे अपनी तलवारें लेकर बेतहाशा उस कुएं की ओर दौड़े और देखते ही देखते वहां एक अच्छा खासा भीड़ जमा हो गई और लगभग कुछ अज्ञानी युवक एक दूसरे पर हमला कर देते, लेकिन तभी कुछ समझदार और निष्ठावान मुहाजिर और अंसार भी मौके पर पहुंच गए। और उन्होंने तुरंत लोगों को अलग-अलग करके सुलह करवा दी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह खबर पहुंची तो आपने फरमाया: "यह एक अज्ञानता का प्रदर्शन है और इस पर नाराज़गी का इज़हार किया। और इस तरह मामला निपट गया लेकिन जब मुनाफिकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबय बिन

सलूल को, जो इस गज़वे में शामिल था, इस घटना की सूचना मिली तो उस बदकिस्मत ने इस फितने को फिर जगाना चाहा और अपने साथियों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के खिलाफ बहुत कुछ उकसाया और कहा कि यह सब तुम्हारा अपना अपराध है कि तुमने इन बेघर मुसलमानों को शरण देकर उन्हें सिर पर चढ़ा लिया है। अब भी तुम्हें चाहिए कि इनकी सहायता से हाथ खींच लो फिर ये खुद ब खुद छोड़कर चले जाएंगे और अंततः इस बदकिस्मत ने यहां तक कह दिया कि

لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ

(अल् मुनाफेकून : 9)

"अर्थात देखो, अब मदीना में जाकर सम्मानित व्यक्ति या समूह उस नीच व्यक्ति या समूह को अपने शहर से बाहर निकाल देता है या नहीं। उस समय एक सच्चे मुस्लिम बच्चे, ज़ैद बिन अर्कम रज़ियल्लाहु अन्हो, ने अब्दुल्लाह के मुंह से आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में ये शब्द सुने, तो वह बेचैन हो गया और तुरंत अपने चाचा के माध्यम से आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस घटना की सूचना दी। उस समय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे। ये शब्द सुनकर वह क्रोध और ग़ैरत से भर गए और आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ करने लगे : ''हे रसूलुल्लाह, मुझे अनुमति दें कि मैं इस मुनाफ़िक फितना-परस्त की गर्दन उड़ा दूं।'' आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ''उमर, जाने दो। क्या तुम यह पसंद करते हो कि लोगों में यह चर्चा हो कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने साथियों को मरवाते फिरते हैं?'' फिर उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों को बुलवाया और उनसे इस बारे में पूछताछ की। उन्होंने शपथ खा ली कि हमने ऐसा कुछ नहीं कहा। कुछ अंसारियों ने भी सिफारिश करते हुए अर्ज़ किया कि ज़ैद बिन अर्कम से गलती हो गई होगी। आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस समय अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों के बयान को क़बूल कर लिया और ज़ैद की बात को नकार दिया जिससे ज़ैद को बहुत दुख हुआ। लेकिन बाद में क़ुरआनी वह्यी ने ज़ैद की पुष्टि की और मुनाफ़िकों को झूठा ठहराया। उधर आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अब्दुल्लाह बिन उबई वगैरह को बुलाकर इस बात की तस्दीक़ शुरू कर दी और इधर उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि इसी समय लोगों को कूच का हुक्म दे दो। यह समय दोपहर का था जब आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आमतौर पर कूच नहीं फ़रमाते थे क्योंकि अरब के मौसम के हिसाब से यह समय कड़ी गर्मी का होता है और इसमें सफ़र करना बेहद तकलीफदेह होता है, लेकिन आपने उस समय के हालात के मुताबिक यही मुनासिब ख्याल फ़रमाया कि अभी कूच हो जाए। इसलिए आपके हुक्म के मुताबिक तुरंत सारा इस्लामी लश्कर वापसी के लिए तैयार हो गया। इसी मौके पर उसैद बिन हुज़ैर अंसारी, जो क़बीला औस के बहुत नामवर प्रमुख थे, आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया: ''हे रसूलुल्लाह, आप आमतौर पर ऐसे समय में सफ़र नहीं फ़रमाते। आज क्या मामला है?'' आपने फ़रमाया: "उसैद! क्या तुमने नहीं सुना कि अब्दुल्लाह बिन उबई ने क्या शब्द कहे हैं? वह कहता है कि हम मदीना चलें और वहां पहुंच कर इज़्ज़त वाला व्यक्ति ज़लील व्यक्ति को बाहर निकाल देगा।'' उसैद ने बेख़ुदी में अर्ज़ किया: "हाँ, हे रसूलुल्लाह! आप चाहें तो अब्दुल्लाह को मदीना से बाहर निकाल सकते हैं क्योंकि बेशक इज़्ज़त वाले आप हैं और वही ज़लील है।" फिर उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया: "हे रसूलुल्लाह, आप जानते हैं कि आपके तशरीफ़ लाने से पहले अब्दुल्लाह बिन उबई अपनी क़ौम में बहुत इज़्ज़तदार था और उसकी क़ौम उसे अपना राजा बनाने की योजना में थी जो आपके तशरीफ़ लाने से नाकाम हो गई। इस वजह से उसके दिल में आपके खिलाफ हसद बैठ गया है। इसलिए आप उसकी इस बकवास की कोई परवाह न करें और उसे माफ़ कर दें।"

(उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, एम.ए., पृष्ठ 559 से 561)

फिर एक दूसरी रिवायत में लिखा है: जब अब्दुल्लाह बिन उबई के बेटे को यह सारी बात मालूम हुई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की बातचीत का इल्म हुआ तो वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : "हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! इस ख़बर की वजह से जो आप तक पहुंची है, अगर आप मेरे बाप को क़त्ल करने का इरादा रखते हैं, तो मुझे हुक्म दें। अल्लाह की क़सम, मैं आपके इस मज्लिस से खड़े होने से पहले उनका सिर ले आऊंगा। अल्लाह की क़सम, खज़्रज वाले जानते हैं कि खज़्रज में कोई आदमी मुझसे ज्यादा वलिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करने वाला नहीं है और हे रसूलुल्लाह, मुझे इस बात का डर है कि आप मेरे अलावा किसी और को उसके क़त्ल का हुक्म दें, तो मेरा नफ़्स मुझे नहीं छोड़ेगा कि मैं अपने बाप के क़ातिल को लोगों में चलता-फिरता देखूं और उसे क़त्ल कर दूं और आग में दाखिल हो जाऊं। ऐसा न हो कि अगर कोई और क़त्ल करे, तो मैं फिर गुस्से में उसे क़त्ल कर दूं। आपका माफ़ करना सबसे अफ़ज़ल है और आपका एहसान करना सबसे अज़ीम है।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी बातें सुनकर फ़रमाया : "अरे अब्दुल्लाह! न मैंने उसके क़त्ल का इरादा किया है और न किसी को उसका हुक्म दिया है। हम ज़रूर उसके साथ हुस्ने सुलूक करेंगे जब तक वह हमारे मध्य है।" अब्दुल्लाह ने अर्ज़ किया: "हे रसूलुल्लाह! बेशक इस शहर वालों ने इत्तेफ़ाक कर लिया था कि मेरे बाप के सिर पर ताज रखेंगे। फिर अल्लाह तआला ने आपको भेजा और अल्लाह तआला ने उसे पस्त कर दिया और आपके जरिये हमें बुलंद कर दिया। और उसके साथ कुछ ऐसे लोग हैं जो उसके पास आते-जाते हैं और उसे वह बातें याद दिलाते हैं जिन पर अल्लाह तआला ग़ालिब आ चुका है।" यह अब्दुल्लाह बिन उबई के बेटे कह रहे हैं।

(सुब्-लुल्हुदा वल् रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 348-350, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि "अब्दुल्लाह बिन उबई का लड़का जिसका नाम हुबाब था, परंतु आँहज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे बदल कर अब्दुल्लाह कर दिया था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, एम.ए., पृष्ठ 561)

बहरहाल, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश पर वापस यात्रा शुरू की गई। विवरण में आगे लिखा है कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस दिन शाम तक, फिर पूरी रात सुबह तक और अगले दिन के शुरुआती हिस्से तक सफर किया। सूरज की तपिश से लोग परेशान होने लगे, तो आपने लोगों के साथ रुकने का हुक्म दिया। जैसे ही लोग ज़मीन पर उतरे, सो गए। पूरे सफर में कोई भी व्यक्ति अपनी सवारी से नहीं उतरा, सिवाय अपनी जरूरत पूरी करने या नमाज़ के लिए। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी सवारी को हांकते और उसकी टांगों पर कोड़ा मारते रहते। यह लंबी यात्रा इसलिए की गई ताकि लोगों को अब्दुल्लाह बिन उबई की वह बात भूल जाए जो पिछले दिन हुई थी।

एक रिवायत में है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सफर कर रहे थे और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी बगल में अपनी सवारी पर थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके चेहरे को देख सकते थे। जब आप अपनी सवारी को तेज़ करते, तो वह तेज़ हो जाती। इसी दौरान आप पर वह्यी नाज़िल होने लगी। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैंने देखा कि आप पर सख्ती आ गई, आपका माथा पसीने से भीग गया, और आपकी सवारी के आगे के पैर थके हुए लगने लगे। मैं जान गया कि आप पर वह्यी आ रही है, क्योंकि यह हालत तब होती थी जब वह्यी नाज़िल होती थी। मुझे उम्मीद थी कि वह्यी में मेरी बात की भी तसदीक़ (पुष्टि) होगी। जब वह्यी पूरी हुई, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मेरा कान पकड़कर कहा, "तुम्हारे कान ने वफ़ा की, और अल्लाह ने तुम्हारी बात की तसदीक़ कर दी।"

एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया कि जब मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सफर में था, मेरा दिल उदास था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे पास आए, मेरे कान को सहलाया और मेरे सामने मुस्कुराए। इस मुस्कान को देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मुझे ज़िंदगी से ज्यादा यह मुस्कान क़ीमती लगी। बाद में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मिले और उन्होंने पूछा, "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुमसे क्या कहा?" मैंने कहा, "उन्होंने मेरे कान को सहलाया और मुस्कुराए।" फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मिले, और मैंने वही बात उन्हें भी बताई।

एक अन्य रिवायत में आया है कि जब सूरः मुनाफ़ेक़ून नाज़िल हुई, तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़ैद को बुलाया और आयतों की तिलावत की। फिर कहा, "अल्लाह ने तुम्हें सच्चा कर दिया है।"

जब हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा को कूच करने का हुक्म दिया, तो अब्दुल्लाह बिन उबई के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह सबसे आगे आकर रास्ते में अपने पिता के लिए खड़े हो गए। जब उन्होंने अपने पिता को देखा, तो उन्हें रोक लिया और कहा, "मैं आपको तब तक नहीं जाने दूंगा, जब तक आप यह स्वीकार नहीं कर लेते कि आप सबसे नीच हैं और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सबसे अधिक सम्मानित हैं।" इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके पास से गुज़रे और फरमाया, "इसे छोड़ दो। मेरी उम्र की कसम! जब तक यह हमारे बीच है, हम इसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।"

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बारे में लिखा है कि अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबई को अपने पिता के खिलाफ इतना गुस्सा था कि जब इस्लामी सेना मदीना की ओर लौटी, तो अब्दुल्लाह ने अपने पिता का रास्ता रोक लिया और कहा, "ख़ुदा की कसम! मैं आपको वापस नहीं जाने दूंगा, जब तक आप यह स्वीकार नहीं कर लेते कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सम्मानित हैं और आप नीच हैं।" अब्दुल्लाह के इस जोर पर आखिरकार उसके पिता ने यह शब्द कह दिए, और तब अब्दुल्लाह ने उसका रास्ता छोड़ दिया। जब वापसी का कूच शुरू हुआ, तो उस दिन का बाकी हिस्सा, पूरी रात और अगले दिन का शुरुआती हिस्सा इस्लामी सेना लगातार चलती रही। जब आखिरकार पड़ाव डाला गया, तो लोग इतने थक चुके थे कि वहां पहुंचते ही अधिकतर गहरी नींद में सो गए। इस तरह हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सूझबूझ से लोगों का ध्यान इस अप्रिय घटना से हटकर एक लंबे समय तक दूसरी तरफ लगा रहा, और अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से मुसलमानों को मुनाफ़िकों की फितना-अंगेज़ी से बचा लिया।

दरअसल, मदीना के मुनाफ़िकों की हमेशा यह कोशिश रहती थी कि किसी तरह से मुसलमानों में गृहयुद्ध और आपसी विभाजन की स्थिति पैदा कर दें। साथ ही, अगर संभव हो तो हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त को कम कर दें। मगर इस्लाम और हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की चुंबकीय व्यक्तित्व ने मुसलमानों में ऐसा एकता का रिश्ता पैदा कर दिया था कि कोई साज़िश इसमें सेंध नहीं लगा सकती थी। हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शख्सियत के बारे में मुसलमानों के दिलों में जो इज़्ज़त, अखलाक, ईमान, और मोहब्बत के जज़्बात गहरे हो चुके थे, उन्हें हिलाना किसी इंसान के बस की बात नहीं थी। इसी मौके पर देखिए कि अब्दुल्लाह बिन उबई, जो मुनाफ़िकों का सरदार था, ने दो साधारण मुसलमानों के एक अस्थायी झगड़े से फायदा उठाते हुए कैसे सहाबा में फूट डालने और हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मोहब्बत और रौब को ठेस पहुंचाने की कोशिश की। परंतु उसे कितनी बुरी नाकामी का सामना करना पड़ा और ख़ुदा ने उसे उसी के बेटे के हाथों से वह ज़िल्लत का प्याला पिलाया, जो उसे शायद मरते दम तक नहीं भूला होगा।

एक दूसरी रिवायत में लिखा है कि इस घटना के बाद जब भी अब्दुल्लाह बिन उबई कोई ऐसी-वैसी बात करता, तो उसकी क़ौम वाले उसे बुरा-भला कहते और रोकते-टोकते। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस हालात का पता चला, तो आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, "उमर, अब बताओ। अल्लाह की कसम! अगर मैं उसे उस दिन कत्ल करवा देता, जब तुमने मुझसे कहा था, तो लोग मुझसे नफ़रत करते और नाक-भौं सिकोड़ते। और अब अगर मैं इन्हीं लोगों को उसके कत्ल का हुक्म दूं, तो वे उसे ज़रूर कत्ल कर देंगे, क्योंकि अब हालात वाज़ेह हो चुके हैं।" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, "अल्लाह की कसम! मैंने जान लिया कि निसन्देह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की राय मेरी राय से ज्यादा बरकत वाली है।"

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ज़वा-ए-बनू मुस्तलिक और अब्दुल्लाह बिन उबई के इस वाक़े का जिक्र करते हुए वर्णन किया है कि "चूंकि काफिर-ए-मक्का मुसलमानों को नुकसान पहुंचाने पर तुले हुए थे और जो क़बीलें दोस्त थे, वे भी दुश्मन बन रहे थे, इसलिए इन मुनाफिक़ों ने, जो मुसलमानों के बीच मौजूद थे, इस अवसर पर यह हिम्मत की कि वे मुसलमानों के साथ होकर जंग में हिस्सा लें। शायद उनका ख़्याल था कि इस तरह उन्हें मुसलमानों को नुकसान पहुंचाने का अवसर मिल सकेगा, परंतु बनू मुस्तलिक के साथ जो लड़ाई हुई, वह कुछ घंटों में खत्म हो गई, इसलिए इस लड़ाई के दौरान मुनाफिक़ों को कोई शरारत करने का अवसर न मिल सका। परंतु हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फैसला किया कि बनू मुस्तलिक के कस्बे में कुछ दिन क़याम फरमाएं। आपके क़याम के दौरान मक्का का रहने वाला एक मुसलमान, जो कि एक मदीना के रहने वाले मुसलमान से कुएं से पानी निकालने के बारे में झगड़ पड़ा, उसने उस मदीना वाले को मारा। इस पर उसने अहले मदीना को, जिन्हें अंसार कहा जाता था, पुकारा, और मक्का वाले ने मुहाजेरीन को पुकारा। इस तरह जोश फैल गया। किसी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि असल वाक़या क्या है, बस जोश में आकर लड़ पड़े। इसी तरह फसाद पैदा होते हैं। दोनों तरफ के जवानों ने तलवारें निकाल लीं। अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल ने सोचा कि ऐसा मौका ख़ुदा ने उसे दिया है। उसने चाहा कि आग पर तेल डाले और अहले मदीना से कहा कि इन मुहाजेरीन पर तुम्हारी मेहरबानी हद से बढ़ गई है और तुम्हारे अच्छे सुलूक से इनके सिर फिर गए हैं और ये दिन-ब-दिन तुम्हारे सिर पर चढ़ते जा रहे हैं।"

करीब था कि इस तक़रीर का वही असर होता जो अब्दुल्लाह चाहता था और झगड़ा और ज़्यादा बढ़ जाता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब्दुल्लाह ने अपनी शरारत भरी तक़रीर के असर का गलत अंदाज़ा लगाया था, और यह सोचते हुए कि उसके शब्द अंसार पर असर कर चुके हैं, उसने यहाँ तक कह दिया कि "हम मदीना पहुँच जाएँगे, फिर जो सबसे सम्मानित इंसान है, वह सबसे नीच इंसान को बाहर निकाल देगा।" सबसे सम्मानित इंसान से उसकी मुराद खुद वह था और सबसे नीच इंसान से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इशारा था। नऊज़ूबिल्लाह (हम इस बात से ख़ुदा की शरण चाहते हैं।)

जैसे ही ये बात उसके मुँह से निकली, सच्चे मुसलमानों पर उसकी असलियत खुल गई और उन्होंने कहा कि "यह मामूली बात नहीं है, बल्कि यह शैतान की बात है जो हमें गुमराह करने आया है।" एक जवान आदमी उठा और अपने चाचा के ज़रिए उसने यह ख़बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँचा दी। आपने अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल और उसके दोस्तों को बुलाया और पूछा कि क्या हुआ है? अब्दुल्लाह और उसके दोस्तों ने बिल्कुल इन्कार कर दिया और कहा कि "यह वाकया जो हमारे सिर पर लगाया गया है, हुआ ही नहीं है।" वे बिल्कुल मुकर गए। आपने कुछ नहीं कहा, लेकिन सच्चाई फैलनी शुरू हो गई। कुछ समय बाद अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल के बेटे अब्दुल्लाह ने भी यह बात सुनी। वह तुरंत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और कहा, "हे अल्लाह के नबी! मेरे बाप ने आपकी बेइज़्ज़ती की है, इसकी सज़ा मौत है। अगर आप यही फैसला करें तो मैं चाहता हूँ कि आप मुझे हुक्म दें कि मैं अपने बाप को क़त्ल करूँ। अगर आप किसी और को हुक्म देंगे और मेरा बाप उसके हाथों मारा जाएगा तो हो सकता है कि मैं उस आदमी को क़त्ल कर अपने बाप का बदला लूँ और इस तरह अल्लाह की नाराज़गी मोल ले लूँ।" क्योंकि उस इलाके के लोगों की तबियतों पर भी कुछ न कुछ असर तो था ही। उन्होंने कहा कि बेहतर यही होगा कि आप मुझे हुक्म दें कि मैं अपने बाप को क़त्ल करूँ। लेकिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया, "मेरा हरगिज़ ऐसा इरादा नहीं है। मैं तुम्हारे वालिद के साथ नरमी और मेहरबानी का सुलूक करूँगा।" जब अब्दुल्लाह ने अपने बाप की बेवफाई और कठोर बातों का हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नरमी और मेहरबानी से मुक़ाबला किया, तो उसका ईमान और भी बढ़ गया और अपने बाप के खिलाफ उसका गुस्सा भी उसी हिसाब से बढ़ गया।

जब लश्कर मदीना के करीब पहुंचा, तो उसने आगे बढ़कर अपने पिता का रास्ता रोक लिया और कहा, "मैं तुम्हें मदीना में प्रवेश नहीं करने दूंगा जब तक तुम वे शब्द वापस नहीं ले लेते जो तुमने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खिलाफ इस्तेमाल किए हैं। जिस मुंह से यह बात निकली है कि अल्लाह का नबी अपमानित है और तुम सम्मानित हो, उसी मुंह से तुम्हें यह कहना होगा कि अल्लाह का नबी सम्मानित है और तुम अपमानित हो। जब तक तुम यह नहीं कहते, मैं तुम्हें आगे नहीं जाने दूंगा।" अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल हैरान और भयभीत हो गया और कहने लगा, "हे मेरे बेटे! मैं तुम्हारी बात से सहमत हूं। मुहम्मद सम्मानित हैं और मैं अपमानित हूं।" इस पर युवा अब्दुल्लाह ने अपने पिता को छोड़ दिया।"

(दीबाचा तफ़सीरुल् क़ुरआन, अनवारुल उलूम,20, पृष्ठ 265 से 267)

इस सफर के दौरान एक और वाकया भी हुआ। एक जगह जब काफिला रुका हुआ था, तो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी गुम हो गई। इसकी तफसील कुछ इस तरह है कि बनू मुसतलक से वापसी पर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम فُوَيْقُ النَّقِيْعِ يابَقُعَاءن नामक एक चश्मे पर रुके। (अल-सिरत अल-नबविया, इब्न हिशाम, पृष्ठ 671, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत) بَقُعَاء،نَقِيع के ऊपर की तरफ है और नकीअ मदीना से दक्षिण

में 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

(सीरत एन्साइक्लोपीडिया, 7, पृष्ठ 191-192, दारुस्सलाम, रियाज़)

खैर, मुसलमानों ने अपने जानवरों को चरने के लिए छोड़ दिया और इस दौरान एक तेज़ आंधी आ गई। इस आंधी की वजह से हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी क़सवा गुम हो गई। मुसलमान उसे हर तरफ़ ढूंढने लगे। ज़ैद बिन लुसैद जो कि अंसार के एक समूह में था, यह मुनाफ़िक़ था। उस समूह में हज़रत अब्बाद बिन बिश्र बिन वक्श, सलमा बिन सलामा और उसैद बिन हुज़ैर भी मौजूद थे। ज़ैद बिन लुसैद यहूदी क़बीले बनू केनक़ा से था। उसका शुमार उन यहूदी आलिमों में होता था जो ऊपर से तो मुसलमान हो गए थे लेकिन अंदर से यहूदी ही थे।

इस मुनाफ़िक़ ज़ैद बिन लुसैद ने कहा, "लोग क्यों इधर-उधर भाग रहे हैं?" उन्होंने कहा, "वे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी तलाश कर रहे हैं जो गुम हो गई है।" लुसैद ने कहा, "क्या अल्लाह तआला उन्हें नहीं बता देता कि वह कहाँ है?" सहाबा ने उसकी यह बात अजीब समझी। उन्होंने कहा, "अल्लाह के दुश्मन! अल्लाह तुझे बर्बाद करे। तू मुनाफ़िक़ है।" जब उसने यह बात कही, तो जो ईमान वाले थे, उन्हें पता चल गया कि यह तो मुनाफ़िक़ाना बात है। उन्होंने कहा, "तू मुनाफ़िक़ है।" फिर हज़रत उसैद बिन हुज़ैर ने उसकी तरफ़ देखा और कहा, "अगर मुझे यह डर न होता कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस बारे में क्या राय है, तो मैं यह भाला तुम्हारे आर-पार कर देता। अल्लाह के दुश्मन, अगर तेरे दिल में यह निफ़ाक़ था, तो फिर तू हमारे साथ क्यों आया?" उसने कहा, "मैं दुनियावी सामान हासिल करने के लिए आया हूँ।"

खुल गया, कुछ न कुछ सामने आ गया और तंज़ करते हुए कहा, "बखुदा! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो हमें इससे बड़े-बड़े मामलों के बारे में बताते हैं। हमें आसमानी मामलों के बारे में बताते हैं, तो भला वह इस ऊँटनी के बारे में क्यों नहीं बता सकते?" मुनाफ़िक़ाना बातें करने लगा। जो वहाँ बैठे थे, वे उसकी तरफ़ लपके और कहा, "बखुदा, अगर हमें पता होता कि तेरे दिल में ऐसे ख़याल हैं, तो हम और तू एक पल के लिए भी साथ नहीं रहते। अब हम एक साथ नहीं रह सकते।" वह डर के मारे वहाँ से भाग गया कि कहीं सहाबा उस पर हमला न कर दें। सहाबा ने उसका सामान, जो वहाँ पड़ा था, बाहर निकाल फेंका।

खैर, वह सहाबा से छिपता हुआ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में पनाह लेने के लिए बैठ गया। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस बारे में जो उसने कहा था, आसमान से वह्यी का नुज़ूल हो चुका था। उस वक्त जब वह मुनाफ़िक़ सुन रहा था, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "मुनाफ़िक़ों में से एक व्यक्ति इस मुसीबत पर खुशियाँ मना रहा है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऊँटनी गुम हो गई है। वह कहता है कि अल्लाह तआला उन्हें क्यों नहीं बता देता कि वह कहाँ है? मेरी उम्र की क़सम! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें ऊँटनी के इस मामले से भी बड़े मामलों की खबर देते रहे हैं।" जब वह वहाँ बैठा था, तो ये सारी बातें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाईं। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, "अल्लाह तआला के अलावा कोई ग़ैब नहीं जानता। उसने मुझे इस ऊँटनी के बारे में बता दिया है।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि मुझे अल्लाह तआला ने बता दिया है कि ऊँटनी कहाँ है। वह सामने उस घाटी में है। उसकी लगाम एक पेड़ के साथ अटकी हुई है। तुम उस तरफ़ जाओ। सहाबा उस तरफ़ गए और उसे उसी तरह पाया जैसे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें बताया था। जब मुनाफ़िक़ ने यह देखा, तो वह हैरान हो गया। जल्दी से उठकर अपने उन साथियों के पास चला गया जो उसके साथ थे। जब यह करीब पहुंचा, तो सहाबा ने कहा, "हमारे करीब मत आना।" उसने कहा, "मैं तुमसे एक बात करना चाहता हूँ।" वह करीब हुआ और उसने कहा, "मैं तुम्हें अल्लाह तआला का वास्ता देकर कहता हूँ कि क्या तुम में से कोई हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ है और उन्हें मेरी बात बताई है जो मैंने की थी?" उन्होंने कहा, "नहीं बखुदा! हम तो अपनी इस महफ़िल से उठकर भी नहीं गए।" उन्होंने कहा, "मैंने तो लोगों में वह बात होते देखी है जो मैंने की थी और उन्हें यह बात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बताई है।" फिर उस व्यक्ति ने उन लोगों को वह सब कुछ बताया जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा था और यह कि आपकी ऊँटनी मिल गई है। उसने कहा, "मुझे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मामले में शक था। अब मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हैं।" गोया कि मैंने आज ही इस्लाम क़बूल किया है। इस घटना के बाद वह कहता है कि अब मैं सच्चे तौर पर इस्लाम क़बूल करता हूँ।

सहाबा ने कहा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाओ कि वह तुम्हारे लिए बख्शिश मांगें। चूंकि वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास गया और बख्शिश मांगी और अपने गुनाह का एतराफ कर लिया। (सब् लुल् हुदा वल् रिशाद,4, पृष्ठ 352-351, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत) (सीरत एन्साइक्लोपीडिया, 7, पृष्ठ 194, दारुस्सलाम, रियाज़) (किताब अल-मग़ाज़ी, 1, पृष्ठ 358-359, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत) इब्न इसहाक ने कहा है कि कुछ लोगों का कहना है कि ज़ैद यानी इस मुनाफ़िक़ ने तौबा कर ली थी और यह भी कहा जाता है कि तौबा नहीं की थी।

(अल्-असाबा फी तमिज़ अल् -सहाबा, 2, पृष्ठ 512, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

बहरहाल, अभी इसके थोड़े से और भी वाकये हैं जो आगे वर्णन होंगे। इस वक्त मैं बांग्लादेश के जो हालात हैं, उनके लिए भी दुआ के लिए कहना चाहता हूँ। वहां जो हुकूमत के खिलाफ फसाद हुआ था, हुकूमत तो खैर खत्म हो गई लेकिन वह फसाद जारी है। (कहते हैं कि अब कल से शायद कुछ थोड़ी सी बेहतरी आई है) और इस वजह से जमाअत के विरोधी समूहों ने इसका फायदा उठाकर अहमदियों को भी नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया है। हमारी कुछ मस्जिदों में तोड़फोड़ की गई और उन्हें जलाया गया। जमिया अहमदिया और जमाअती इमारतों को भी नुकसान पहुंचाया गया। वहां भी तोड़फोड़ की गई और सामान जलाया गया। कुछ अहमदी वहां घायल भी हुए हैं, और बहुत गंभीर घायल हुए हैं। अहमदियों को मारा-पीटा गया है। कई अहमदियों के घरों को भी नुकसान पहुंचाया है, उन्हें भी जला दिया गया बल्कि कुछ घरों के बारे में तो खबर है कि पूरी तरह से जला दिया गया। कुछ का सामान जलाया गया। पूरी तरह से लापरवाही है और अहमदियों को तो यहाँ पहले एक बार जलसा के दौरान और अब यह दूसरी बार इस इलाके में नुकसान उठाना पड़ा है, लेकिन उनके ईमान में कोई कमज़ोरी नहीं आई। अल्लाह तआला के फजल से ईमान में मजबूत हैं और उन्होंने कहा है कि अल्लाह की खातिर हम यह भी बर्दाश्त करेंगे। अल्लाह तआला रहम और फज़ल फरमाए और अहमदियों को अपनी हिफाजत में रखे और विरोधियों की पकड़ करे। इसी तरह पाकिस्तान में भी अहमदियों के हालात के लिए दुआ करें। वहां भी कुछ सख्त हालात पैदा हो रहे हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी हर बुराई से महफूज रखे। आजकल मुल्ला और स्वार्थी लोग अहमदियों के खिलाफ ज्यादा सक्रिय हैं। अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नाम पर ये लोग जुल्म कर रहे हैं। अल्लाह तआला इनकी पकड़ के भी जल्द इंतजाम करे। फिलिस्तीन के मुसलमानों के लिए भी दुआ करें। उन पर भी जो लोग यह जुल्म कर रहे हैं, अल्लाह तआला उनकी पकड़ करे और यह जुल्म खत्म हो। आम तौर पर मुसलमान दुनिया के लिए दुआ करें। यह आपस में जो एक दूसरे पर जुल्म कर रहे हैं, वे भी खत्म हों और यह अल्लाह तआला से वास्तविक संबंध पैदा करने वाले हों और जमाने के इमाम को मानने वाले हों। यही उनकी बचत का रास्ता है। यही निजात का रास्ता है, लेकिन ये लोग इसे समझते नहीं। मैं इस वक्त दो जनाजे भी पढ़ाऊंगा। मरहूमीन का जिक्र करता हूँ। पहला जिक्र श्रीमान जाकाउल रहमान साहिब शहीद का है। चौधरी अब्दुल् रहमान साहिब लाला मूसा ज़िला गुजरात के यह बेटे थे। पिछले दिनों इनकी शहादत हुई है। जलसा के दिनों में, 27 जुलाई को लगभग सुबह साढ़े नौ बजे दो अज्ञात व्यक्तियों ने उनके क्लिनिक में घुसकर फायरिंग की, जिसके परिणामस्वरूप वे मौके पर शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनकी उम्र 53 साल थी। विवरण के अनुसार, डॉक्टर ज़क़ा-उर-रहमान साहिब शहीद सामान्य रूप से क्लिनिक खोलकर बैठे हुए थे कि दो अज्ञात नकाबपोश व्यक्ति साढ़े नौ बजे सुबह मोटरसाइकिल पर आए, जिनमें से एक क्लिनिक के अंदर घुसा जबकि दूसरा क्लिनिक के बाहर खड़ा रहा। अंदर दाखिल हुए व्यक्ति ने श्रीमान डॉक्टर साहिब पर फायरिंग शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें तीन गोलियां लगीं, जिनमें से एक गोली सीने पर दिल के पास, एक गोली पेट पर और एक गोली हाथ पर लगी। घटना के बाद दोनों आरोपी भागने में सफल हो गए। फायरिंग की आवाज़ सुनकर श्रीमान डॉक्टर साहिब शहीद के पड़ोसी क्लिनिक में आए, जिन्होंने डॉक्टर साहिब को घायल अवस्था में पाया। डॉक्टर साहिब शहीद ने उनसे कुछ बताने की कोशिश

की, लेकिन खून की उल्टी आई और वे शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। वक्त-ए-शहादत वे पाकिस्तान में अकेले ही थे। उनकी पत्नी जलसा सालाना यूके में शामिल होने की वजह से यूके आई हुई थीं। डॉक्टर ज़क़ाउल् रहमान साहिब शहीद के परिवार में अहमदियत का प्रवेश हज़रत हाफिज़ अहमद दीन साहिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, जो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और चक सिकंदर के निवासी थे, के माध्यम से हुआ था, जो तीन सौ तेरह सहाबियों में शामिल थे। शहीद मरहूम के पड़दादा श्रीमान नेक आलम साहिब, जो कि हज़रत हाफिज़ अहमद दीन साहिब के भतीजे थे, ने 10 जून 1901 में बेयत की, जिसके बाद उन्हें सफर-ए-जहलम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हाथ के बेयत का सौभाग्य मिला। उनके परिवार में पहले भी खलील अहमद सोलंगी साहिब शहीद हुए थे, जो लाहौर में शहीद हुए थे और डॉक्टर ज़क़ाउल् रहमान साहिब मरहूम के मामा के बेटे थे। शहीद मरहूम ने विभिन्न जमाअती पदों पर सेवा की सौभाग्य पाया। काफी समय तक स्केटरी माल जमाअत लाला मूसा ज़िला गुजरात रहे। वक्त-ए-शहादत सेवा के रूप में जमाअत के अध्यक्ष के रूप में सेवा कर रहे थे। चंदों में नियमित, गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करने वाले व्यक्ति थे। जवानी के दिनों में जब हालात बेहतर थे, दोस्तों को तबलीग की खातिर ज़ियारत-ए-मरकज के लिए भी ले जाते थे। डॉक्टर ज़क़ाउल् रहमान साहिब शहीद के बारे में अमीर साहिब ज़िला गुजरात कहते हैं कि शहीद मरहूम अनगिनत खूबियों के मालिक थे, जिनमें माली कुर्बानी करना एक प्रमुख विशेषता थी। अधिकारियों और सबसे बढ़कर खलाफत अहमदियत की आज्ञाकारिता का भी गुण बहुत प्रमुख था। हर किसी से हंसते-मुस्कराते मिलते और चेहरे पर मुस्कान रहती थी। सेवा का जज्बा भी भरा हुआ था। डॉक्टर साहिब शहीद अक्सर गरीबों का मुफ्त इलाज करते थे। क्षेत्र में गैर-जमाअत के लोगों के साथ आपके अच्छे संबंध थे। जिनका वर्णन गैर-जमाअत के लोगों ने आपकी शहादत के बाद किया है और कुछ गैर-जमाअत के लोग आपके जनाज़े में भी शामिल हुए हैं। अमीर साहिब लिखते हैं कि ईदुल् अज़हा 24 से पहले डॉक्टर साहिब ने मुझसे वर्णन किया कि सरकारी अधिकारी आए थे और उन्होंने कहा है कि आपकी जान को खतरा है, इसलिए आप ईद तक क्लिनिक पर न बैठें। लेकिन बहरहाल उनमें हिम्मत थी और वे बैठे रहे। मरहूम ने पीछे पत्नी श्रीमती नगीना रफीक साहिबा, एक बेटा और तीन बेटियां छोड़ी हैं। दो बेटियों की शादी हो चुकी है, एक बेटी जर्मनी में पढ़ाई कर रही है। अल्लाह तआला शहीद के दर्जात बुलंद करे और परिवार वालों को सब्र अता करे। बच्चों को भी उनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफीक अता करे।

दूसरा जनाज़ा सईदा बशीर साहिबा का है, जो मलिक बशीर अहमद साहब की पत्नी थीं। यह भी कुछ दिनों पहले 83 साल की उम्र में इंतेक़ाल फरमा गईं।इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा वसीयत करने वाली थीं। पीछे छोड़े जाने वालों में एक बेटा और दो बेटियां शामिल हैं। मलिक ग़ुलाम अहमद साहब, जो घाना में मुरब्बी सिलसिला हैं, की माता थीं, जो मैदान-ए-अमल में होने की वजह से अपनी वालिदा के जनाज़े और तदफीन में शामिल नहीं हो सके।

उनके बेटे ग़ुलाम अहमद साहब मुरब्बी कहते हैं कि हमारे परिवार में अहमदियत आपके दादा हज़रत मलिक अल्लाह बख्श साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से आई, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। वह एक आलिम बा अमल और नेक इंसान थे जिन्होंने सूरज और चांद के ग्रहण की शहादत को देखकर लोधरां से क़ादियान तक पैदल सफर किया और बैअत की सआदत पाई। उनकी वालिदा हज़रत अम्मा जान हज़रत नुसरत जहां बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा की शफक़त से भी हिस्सा पाती रहीं। मुरब्बी साहब कहते हैं कि हमारी वालिदा हमें बताया करती थीं कि रब्वा में मुझे हज़रत अम्मा जान रज़ियल्लाहु अन्हा का बहुत प्यार मिला। कहती थीं कि मैं उनके पास रहती थी। मुझे रोटी किसी वजह से पसंद नहीं थी, अक्सर तंगी के बावजूद हज़रत अम्मा जान रज़ियल्लाहु अन्हा मुझे पैसे देती थीं कि जाओ और अपने लिए बाजार से बंद ब्रेड ले आओ, और फिर मैं उसे दूध के साथ खाती थी। कहती हैं कि एक बार मैं छोटी थी और किसी वजह से रो रही थी तो हज़रत अम्मा जान रज़ियल्लाहु अन्हा ने मुझे बड़े प्यार से अपनी गोद में बिठाया, प्यार किया और अपने हाथ से खाना खिलाया। मुरब्बी साहब कहते हैं कि मेरी वालिदा एक यतीम बच्चे की तरह पली-बढ़ीं लेकिन हज़रत अम्मा जान रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे बुजुर्गों की पाक सोहबत ने उन पर गहरा असर छोड़ा। उन्होंने सारी उम्र बाक़ायदा तहज्जुद अदा की और नमाज़ों की पाबंद थीं। वह न सिर्फ खुद बल्कि बच्चों को भी नमाज़ की ताकीद करती थीं। नज़र कमज़ोर होने के बावजूद रमज़ान में क़ुरआन दो या तीन बार ख़त्म करती थीं। ख़िलाफ़त से बहुत प्यार और वफ़ादारी का ताल्लुक था। ख़ुलफ़ा के ख़ुत्बात और ख़िताबात बड़े एहतमाम से और खामोशी से सुनती थीं।

फिर एक और खूबी का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि किसी से ऊँची आवाज़ में बात करना उन्हें सख्त नापसंद था, बल्कि अगर बच्चे भी ऊँचा बोलते तो उन्हें रोकती थीं। मुरब्बी साहब कहते हैं कि मैंने उन्हें हमेशा अपने शौहर का सच्चा और वफादार साथी देखा और उन्होंने हमें नमाज़ का पाबंद बनाया। 'यस्सरनल् क़ुरआन' पढ़ाया और फिर क़ुरआन पढ़ाया। ख़िलाफ़त और निज़ाम-ए-जमाअत की मोहब्बत हमारे दिलों में बैठाई। मुझे यह कहा करती थीं कि सियालकोट की जो मस्जिद मुबारक है, वहां जाने का दिल करता है ताकि मैं उन मुबारक जगहों पर नमाज़ अदा कर सकूं, जहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ें पढ़ी हैं। मुरब्बी साहब कहते हैं कि इत्तेफाक से मेरा तकर्रुर वहाँ हुआ तो मैं अपने वालिदैन को सियालकोट ले गया और वालिदा ने वहाँ जाकर मस्जिद के हर हिस्से में नफ्ल और नमाज़ें बड़ी रिक़्क़त के साथ अदा कीं और अपनी दिली ख़्वाहिश के पूरा होने पर अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा किया। वह बहुत दुआगो थीं। अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहने वाली, दुनिया की आलाइशों और ख्वाहिशात से पूरी तरह दूर रहने वाली, मुखलिस और हर लिहाज़ से मिसाली महिला थीं।

अल्लाह तआला उनसे मग़फिरत और रहम फरमाए। नेकियाँ उनके बच्चों और आगे आने वाली नस्लों में भी जारी रहें।

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerator, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com

9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

Eyebrow Pluck करना अवैध और ज़िना (व्यभिचार) के बराबर है? और Body Wax करने के बारे में हज़ूर अनवर की क्या मार्गदर्शन है?

जब आदमी पश्चिमी देशों में कानूनी तौर पर दूसरी शादी का अधिकार नहीं रखता, तो क्या पहली पत्नी को तलाक दिए बिना दूसरा निकाह करना ज़िना (व्यभिचार) माना जाएगा?

इस्लाम में औरत को अपने आपको ढकने का आदेश है, लेकिन हम स्कार्फ आदि पहनकर सिर पर पर्दा क्यों करते हैं? लड़कियाँ स्कूल में लड़कों से दोस्ती क्यों नहीं कर सकतीं? और क्या Halloween पर परी बना जा सकता है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 31)

प्रश्न: एक महिला ने हज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि एक मुरब्बी साहिब ने Eyebrow Pluck करने को अवैध और ज़िना (व्यभिचार) के बराबर कहा है। इस बारे में और Body Wax करने के बारे में मार्गदर्शन की अपील की है। हज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 16 जनवरी 2021 के अपने पत्र में इस बारे में निम्नलिखित निर्देश दिए: उत्तर: हदीसों में आता है कि अल्लाह ने सुंदरता के लिए शरीर को गोदने वाली महिलाओं, गोदवाने वाली महिलाओं, चेहरे के बालों को हटाने वाली महिलाओं, सामने के दांतों में गैप बनाने वाली महिलाओं और बालों में नकली बाल लगाने या लगवाने वाली महिलाओं पर लानत भेजी है, जो अल्लाह की रचना में बदलाव करती हैं।

(सहीह बुखारी किताबुल् लिबास)।

इस्लाम का हर आदेश अपने में कोई न कोई हिकमत (समझदारी) रखता है। इसी तरह कुछ इस्लामी आदेशों का एक खास पृष्ठभूमि होता है। अगर उस पृष्ठभूमि को न समझा जाए तो आदेश का अर्थ बदल जाता है। जब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आगमन हुआ, तो दुनिया में और खासतौर पर अरब प्रायद्वीप में जहां विभिन्न प्रकार की बुराइयों का ज़हर फैला हुआ था, वहां विभिन्न प्रकार की बेदीनियां भी आम थीं। पुरुष और महिलाएं विभिन्न प्रकार की बुरी और मूर्तिपूजक प्रथाओं में लिप्त थे।

उपर्युक्त आदेशों पर आधारित हदीसों में दो बातों का विशेष उल्लेख मिलता है: एक यह कि इन कामों के परिणामस्वरूप अल्लाह की रचना में बदलाव किया जाता है और दूसरा केवल सुंदरता प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाता है। इन दोनों बातों पर जब हम विचार करते हैं, तो पहली बात अर्थात अल्लाह की रचना में बदलाव जहां सामाजिक बुराइयों की ओर इशारा करती है, वहीं मूर्तिपूजक क्रियाओं की भी झलक देती है। उदाहरण के लिए बालों में लंबे जुड़े लगाकर सिर पर बालों की पगड़ी बनाकर उसे बड़ेपन की निशानी समझना, किसी गुरु की भेंट के रूप में बालों के गुच्छे बनाना या सिर को बीच से मुंडवाना और उसे बच्चों के लिए शुभ मानना, या शरीर, चेहरे और बाहों पर देवी, देवता या जानवर की आकृति गुदवाना। ये सभी मूर्तिपूजक तरीके थे और इनके पीछे उस समय धार्मिक विश्वास काम करते थे। दूसरी बात अर्थात केवल सुंदरता प्राप्त करने के लिए ऐसा करना, कुछ हद तक सामाजिक बुराइयों और व्यभिचार को दर्शाती है। उचित सीमाओं में रहते हुए कोई भी व्यक्ति अपनी सुंदरता के लिए कोई वैध तरीका अपनाता है, तो उसमें कोई हानि नहीं है। हदीस में आता है कि एक व्यक्ति ने कहा कि मुझे अच्छा लगता है कि मेरे कपड़े अच्छे हों, मेरा जूती अच्छी हो, तो क्या यह घमंड में आता है? इस पर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यह घमंड नहीं है, घमंड तो हक को नकारने और दूसरों को छोटा समझने का नाम है। और साथ ही यह भी कहा : "अल्लाह बहुत सुंदर है और सुंदरता को पसंद करता है" (सहीह मुस्लिम, किताबुल् ईमान। इसी तरह यह बात भी प्रमाणित है कि उस समय भी लड़कियों की शादी होने पर उन्हें उस समय के अनुसार सजाया जाता था और सुंदर बनाया जाता था। इसलिए जिस सुंदरता के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने लानत से डराया है, उसका अर्थ कुछ और है। जब हम इस संदर्भ में इन हदीसों पर विचार करते हैं, तो हमें यह भी पता चलता है कि इन कामों के मना करने के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने यह भी कहा कि बनी इस्राईल उस समय तबाह हुए जब उनकी औरतों ने इस प्रकार के कार्य शुरू किए।

(सहीह बुखारी किताबुल् लिबास)।

इसलिए, यह दिखने में यह हिकमत है कि अगर इंसान के शारीरिक रूप में ऐसी कृत्रिम बदलाव हो जाए कि पुरुष और महिला की पहचान खत्म हो जाए, या इन कार्यों से किसी प्रकार की बुराई की ओर झुकाव हो या किसी मूर्तिपूजक रस्म की अभिव्यक्ति हो, तो यह सभी कार्य अवैध और अनुचित होंगे।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने इन बुराइयों के इस संदर्भ में जहां उस समय की महिलाओं को इन कार्यों से रोका, वहीं तकलीफ या बीमारी के कारण इसे आवश्यक रूप में अनुमति दी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि मैंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को औरतों को मोचने, दांतों को बारिक करने, नकली बाल लगाने और शरीर को गुदवाने से मना करते हुए सुना, हां बीमारी हो तो अनुमति है (मस्नद अहमद बिन हम्बल)। इस्लाम ने कामों का आधार नीयतों पर रखा है। इसलिए उस समय के पर्दे के इस्लामी आदेश का पालन करते हुए अगर कोई औरत वैध तरीके से और वैध उद्देश्य के लिए इन चीज़ों का उपयोग करती है, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन अगर इन कामों से किसी बुराई की ओर झुकाव होता है या किसी मूर्तिपूजक रस्म का प्रदर्शन होता है, या इस्लाम के किसी स्पष्ट आदेश की अवहेलना होती है, जैसे कि इस समय महिलाएं अपनी सफाई या वैक्सिंग आदि कराते समय अगर पर्दा का पालन न करें और दूसरी महिलाओं के सामने उनके शरीर के हिस्सों की बेपर्दगी होती हो, तो फिर यह कार्य हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के उसी चेतावनी के अंतर्गत आएगा और इसकी अनुमति नहीं है।

फिर इस संदर्भ में यह बात भी ध्यान में रखना चाहिए कि अल्लाह ने फितना और फसाद को हत्या से भी बड़ा गुनाह मान कर फसाद को रोकने का आदेश दिया है। कुछ ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि रिश्ते इसलिए टूट गए या शादी के बाद तलाक़ हुई कि पुरुष को बाद में पता चला कि औरत के चेहरे पर बाल हैं। अगर कुछ बालों को साफ न किया जाए या खिंचवाया न जाए तो इससे और अधिक घरों की तबाही होगी। नापसंदगी की एक लंबी श्रंखला शुरू हो जाएगी। और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इस आदेश से यह उद्देश्य हरगिज़ नहीं हो सकता कि समाज में ऐसी स्थिति पैदा हो कि जिसके परिणामस्वरूप घरों में फसाद फैले। ऐसे कड़े शब्दों में जो हिकमत नजर आती है वह यही है कि मूर्तिपूजा सबसे बड़ा गुनाह है और ये बातें चूंकि देवी, देवताओं आदि के लिए अपनाई जाती थीं या उनके परिणामस्वरूप व्यभिचार को सामान्य किया जाता था, इसलिए आपने सख्त शब्दों में इससे घृणा का इजहार किया और इस प्रकार मूर्तिपूजक रस्मों और आदतों और व्यभिचार की जड़ें काटी।

प्रश्न: एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में तहरीर किया कि उसके पति ने जमाअत से निकाले जाने के बाद बिना तलाक दिए दूसरी शादी कर ली है, जबकि कानून के अनुसार उन्हें दूसरी शादी का अधिकार नहीं है, इसलिए वह ज़िना (व्यभिचार) कर रहे हैं। इस्लाम की दृष्टि से मुझे इस निकाह की कोई अहमियत समझ नहीं आई। इसलिए इस निकाह को रद्द किया जाए। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मक्तूब दिनांक 16 जनवरी 2021 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया: उत्तर: यह बात सही है कि अधिकांश पश्चिमी देशों में एक पत्नी होते हुए कानूनी रूप से दूसरी शादी करना मना है, लेकिन इस्लाम ने पुरुष को चार शादियां करने की अनुमति दी है। यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसे स्थान पर जाकर जहां दूसरी शादी की मनाही नहीं

है, बाकायदा निकाह के माध्यम से दूसरी शादी कर लेता है, तो उन पश्चिमी देशों में उसकी दूसरी पत्नी को किसी प्रकार के कानूनी अधिकार नहीं मिलते, लेकिन शरई (धार्मिक) रूप से वह उसकी पत्नी ही मानी जाएगी और उसके साथ उसके शारीरिक संबंध ज़िना (व्यभिचार) नहीं माने जाएंगे।

अगर आपके पति उस महिला से बिना निकाह के संबंध रखते, जो कि शरई (धार्मिक) रूप से हराम है लेकिन इन पश्चिमी देशों के कानूनों में इसकी गुंजाइश निकल आती है, तो क्या यह बात आपको खुशी देती?

इस्लाम ने जिस तरह पुरुष के लिए उसकी आवश्यकता के अनुसार अधिकार निर्धारित किए हैं, उसी तरह स्त्री के लिए भी उसने विभिन्न अधिकार स्थापित किए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस्लामी शिक्षा के इस पहलू को वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं: "यह मसला इस्लाम में प्रचलित और मान्य है कि चार तक पत्नियाँ करना जायज़ है। परंतु किसी पर ज़बरदस्ती नहीं है और हर एक पुरुष और स्त्री को इस मसले की पूरी खबर है। तो यह उन महिलाओं का अधिकार है कि जब वे किसी मुसलमान से निकाह करना चाहें, तो पहले शर्त कर लें कि उनका पति किसी भी स्थिति में दूसरी बीवी नहीं करेगा। और अगर निकाह से पहले ऐसी शर्त लिखवाई जाए, तो बेशक ऐसी पत्नी का पति अगर दूसरी बीवी करे, तो वह वचनभंग (वादाखिलाफी) का दोषी होगा। लेकिन अगर कोई स्त्री ऐसी शर्त न लिखवाए और शरई हुक्म को मान ले, तो उस स्थिति में किसी और का हस्तक्षेप करना अनुचित होगा। और यहां यह कहावत सच साबित होगी कि मियां-बीवी राज़ी, तो क्या करेगा काज़ी। हर एक समझदार यह समझ सकता है कि अल्लाह ने तो बहुविवाह (ताद्दुद-ए-अजदवाज) को फरज़ (अनिवार्य) और वाजिब (लाजिमी) नहीं किया है। अल्लाह के हुक्म के अनुसार केवल जायज़ है। तो अगर कोई पुरुष अपनी किसी आवश्यकता की वजह से इस जायज़ हुक्म से फायदा उठाना चाहे, जो अल्लाह के जारी किए गए कानून के अनुसार है, और उसकी पहली बीवी इससे सहमत न हो, तो उस बीवी के लिए यह रास्ता खुला है कि वह तलाक ले ले और इस परेशानी से छुटकारा पाए। और अगर दूसरी औरत, जिससे निकाह करने का इरादा है, इस निकाह पर सहमत न हो, तो उसके लिए भी यह आसान तरीका है कि ऐसे प्रस्तावक को इन्कार कर दे। किसी पर ज़बरदस्ती नहीं है, लेकिन अगर वे दोनों औरतें इस निकाह पर सहमत हो जाएं, तो उस स्थिति में किसी अन्य धर्मावलंबी को बेवजह हस्तक्षेप करने और आपत्ति करने का क्या अधिकार है?"

(चश्मा-ए-मआरिफत, रूहानी खज़ायन, खंड 23, पृष्ठ 246)

प्रश्न: एक स्कूल की बच्ची ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि इस्लाम में औरत को अपने आप को ढकने का हुक्म है, लेकिन हम स्कार्फ इत्यादि लेकर सिर पर पर्दा क्यों करते हैं? लड़कियां स्कूल में लड़कों से दोस्ती क्यों नहीं कर सकतीं? और क्या मैं हैलोवीन में परी बन सकती हूँ? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मक्तूब दिनांक 26 जनवरी 2021 में इस प्रश्न के उत्तर में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया:

उत्तर: इस्लाम ने पर्दे के बारे में औरत और मर्द दोनों को बेहद हिकमतभरी तालीम से नवाज़ा है। चूंकि फ़रमाया गया है कि मोमिन मर्द और औरतें दोनों अपनी नज़रें नीची रखें, अर्थात अपनी आँखों को नामोहरिमों को देखने से बचाएं और अपने सतर (शारीरिक अंगों) को पर्दे में रखें। इसके बाद मोमिन औरतों को विशेष रूप से ताकीद की गई कि वे अपनी ओढ़नियों को अपने गले के ऊपर डाल लें और अपनी ज़ीनतों को ज़ाहिर न करें और अपने पैर भी इस तरह ज़मीन पर न मारें कि जिससे उनकी ज़ीनत ज़ाहिर हो।

इस संक्षिप्त लेकिन बेहद व्यापक तालीम में पर्दे के बारे में हर प्रकार की तफसील वर्णन कर दी गई है कि एक मोमिन औरत अपनी आंख, कान और सतर की जगहों की हिफ़ाज़त के साथ इस बात का भी ख्याल रखे कि उसका लिबास न तो इतना तंग हो कि उससे उसके जिस्म के अंगों की नुमाइश हो और न ही इतना ढीला और खुला हो कि सीना और दूसरी सतर की जगहों की बेपर्दगी हो रही हो।

पैर ज़मीन पर न मारने के हुक्म में यह बात समझा दी गई कि एक मोमिन औरत इस तरह की उछल-कूद से भी बचे जिससे उसके जिस्म की बनावट के उतार-चढ़ाव का इज़हार हो। या यह कि अगर पैरों में कोई ज़ेवर (पाजेब इत्यादि) पहना हुआ है, तो उसकी छनकार से लोगों की तवज्जो उसकी तरफ हो और ग़ैरों की नजरें उस पर उठें। या अगर पैरों पर मेहंदी या नेल पॉलिश इत्यादि लगाकर उनका श्रृंगार किया गया है, तो इसकी वजह से ग़ैर मर्दों की नजरें उस पर उठें। ये सब बातें पर्दे के अहकामात के खिलाफ़ हैं।

इसलिए इस्लाम ने औरत के लिए केवल सिर पर स्कार्फ लेना ही काफी नहीं माना बल्कि ये बातें बताकर पर्दे से संबंधित तमाम ज़रूरी बातों को भी खुलकर वर्णन कर दिया कि औरत ने किस तरह अपने पर्दे का ख्याल रखना है और किस तरह खुद को ढकना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर्दे से संबंधित इन आयतों की वज़ाहत करते हुए फरमाते हैं: "ईमानदारों को जो मर्द हैं कह दे कि अपनी आंखों को नामोहरिमों औरतों को देखने से बचाएं और ऐसी औरतों को खुले तौर पर न देखें जो शहवत का कारण हो सकती हैं और ऐसे अवसर पर आँखें नीची करने की आदत डालें और अपने सतर की जगह को जिस तरह मुमकिन हो बचाएं। इसी तरह कानों को नामोहरिमों से बचाएं, अर्थात बेगाना औरतों के गाने बजाने और सुरीली आवाज़ की आवाज़ें न सुनें। उनके हुस्न के किस्से न सुनें। यह तरीका पाक नज़र और पाक दिल रहने के लिए उत्तम तरीका है। इसी तरह ईमानदार औरतों को कह दे कि वे भी अपनी आंखों को नामोहरिम मर्दों को देखने से बचाएं और अपने कानों को भी नामोहरिमों से बचाएं, अर्थात उनकी पुरशहवत आवाज़ें न सुनें और अपने सतर की जगह को पर्दे में रखें और अपनी ज़ीनत के अंगों को किसी गैर मोहरिम पर न खोलें और अपनी ओढ़नी को इस तरह सिर पर लें कि गले से होकर सिर पर आ जाए अर्थात गला और दोनों कान और सिर और कनपटियां सब चादर के पर्दे में रहें और अपने पैरों को ज़मीन पर नाचने वालों की तरह न मारें।"

(इस्लामी उसूल की फिलॉसफी, रूहानी खज़ायन, खंड 10, पृष्ठ 341-342)

हज़ूर अलैहिस्सलाम आगे फरमाते हैं : "क़ुरआन मुसलमान मर्दों और औरतों को हिदायत करता है कि वे अपनी नज़रों को नीची रखें। जब एक-दूसरे को देखेंगे ही नहीं, तो महफ़ूज़ रहेंगे...

इस्लामी पर्दा का मतलब यह नहीं है कि औरत को जेल की तरह बंद रखा जाए। क़ुरआन शरीफ का मतलब यह है कि औरतें अपनी हिफाज़त करें। वे गैर मर्द को न देखें। जिन औरतों को सामाजिक कार्यों के लिए बाहर जाने की ज़रूरत पड़े, उन्हें घर से बाहर निकलने की मनाही नहीं है, वे बेशक बाहर जाएं, लेकिन नज़र का पर्दा ज़रूरी है।"

(मलफूज़ात, खंड 1, पृष्ठ 405, मुद्रित 2016)

जहां तक लड़कियों और लड़कों की दोस्ती का प्रश्न है, तो इसमें भी बुनियादी हिकमत औरत की इफ़्फ़त (पवित्रता) की हिफाज़त ही है। इंसान के अपनी विपरीत लिंग के साथ मेलजोल से कई प्रकार की बुराइयों के पैदा होने की संभावना होती है। इसलिए इस्लाम ने इस पहलू से भी मोहरम और गैर मोहरम रिश्तों का फर्क कायम कर के मर्द और औरत के संबंधों की हदें वर्णन कर दीं, और अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बारे में अपने अनुयायियों को बड़ी स्पष्ट शिक्षा दी। इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई व्यक्ति किसी नामोहरम औरत से अकेले में न मिले क्योंकि उनमें तीसरा शैतान होता है।

(सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल फितन)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस हुक्म की हिकमत वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं: "बहुत बार सुनने और देखने में आया है कि कुछ लोग गैर मर्द और औरत के एक मकान में अकेले रहने को, भले ही दरवाजा बंद हो, कोई ऐब नहीं समझते। यह मानो तहज़ीब है। इन्हीं बुरे नतीजों को रोकने के लिए शरिअत-ए-इस्लाम ने उन बातों को करने की इजाजत ही नहीं दी जो किसी की ठोकर का कारण हो सकती हैं। ऐसे मौके पर यह कह दिया कि जहां इस तरह गैर मोहरम मर्द और औरत दोनों मौजूद हों, उनमें तीसरा शैतान होता है। उन गंदे नतीजों पर गौर करो जो यूरोप इस तरह की बेलगाम शिक्षा से भुगत रहा है। कुछ जगहों पर बिल्कुल शर्मनाक तवायफी जीवन जीया जा रहा है। यह इन्हीं शिक्षाओं का नतीजा है। अगर किसी चीज़ को धोखे से बचाना चाहते हो, तो हिफाज़त करो, लेकिन अगर हिफाज़त नहीं करते और यह समझते हो कि ये भले लोग हैं, तो याद रखो कि वह चीज़ ज़रूर तबाह होगी। इस्लामी शिक्षा कितनी पाक (पवित्र) शिक्षा है, जिसने मर्द और औरत को अलग रखकर ठोकर से बचाया और इंसान की ज़िन्दगी को हराम और कड़वी नहीं बनाया।"

(मल्फूज़ात, खंड 1, पृष्ठ 34-35, एडिशन 1984)

हैलोवीन की रस्म, जिसे अब मज़े के तौर पर माना जाता है, उसकी बुनियाद शैतानी नज़रियों और शिर्की (मूर्ति पूजा संबंधी) आस्थाओं पर आधारित है और यह एक छिपी हुई बुराई है। एक सच्चे मुसलमान और विशेषता एक अहमदी को हमेशा याद रखना चाहिए कि हर वह काम जिसकी बुनियाद शिर्क पर हो, भले ही वह मज़े के लिए हो, उससे बचना चाहिए, क्योंकि इस तरह की रस्में इंसान को मज़हब से दूर ले जाती हैं। फिर इस त्यौहार के अवसर पर, मनोरंजन के नाम पर बच्चे जिस तरह लोगों के घरों में भिखारियों की तरह मांगते फिरते हैं, वह भी एक अहमदी बच्चे की गरिमा के खिलाफ है। एक अहमदी की अपनी एक गरिमा होती है, और इस गरिमा को हमें बचपन से ही बच्चों के दिमाग में स्थापित करना चाहिए। इन बातों के अलावा भी इस रस्म के और कई सामाजिक बुरे प्रभाव नई पीढ़ी पर हो रहे हैं।

इसलिए हैलोवीन की रस्म में किसी अहमदी को शामिल होने की इजाज़त नहीं है, चाहे वह भूत, चुड़ैल बनना हो या परी बनना हो, क्योंकि यह रस्म एक गलत और शिर्की आस्था पर आधारित है।

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

रविवार ,2022 अक्टूबर 2 ,दौरा-ए-अमेरिका का सातवां दिन

ज़ायन से डलास रवाना, डलास में आगमन

हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बजकर पचास मिनट पर मस्जिद फतेह अज़ीम में तशरीफ लाकर नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद, हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला अपनी रिहाइशगाह पर वापस तशरीफ ले गए।

सुबह हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक देखी और हिदायतें दीं।

ज़ायन से डलास की रवानगी

आज कार्यक्रम के अनुसार ज़ायन (Zion) से डलास (Dallas) के लिए रवाना होना था। सुबह से ही ज़ायन और अन्य विभिन्न जमाअतों से आए हुए मर्द और औरतें अपने प्यारे आका को विदाई देने के लिए बड़ी संख्या में जमा थीं।

दस बजकर पचपन मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ लाए। कार्यक्रम के अनुसार, लोकल मज्लिस आमला जअमात ज़ायन ने हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। ट्रांसपोर्टेशन टीम और ज़ियाफत टीम ने भी ग्रुप फोटो खिंचवाने का सम्मान प्राप्त किया।

औरतें एक अलग हिस्से में खड़ी थीं। हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला उस जगह तशरीफ ले आए। "अस्सलामो अलैकुम हज़ूर!" की आवाज़े हर तरफ से आ रही थीं। माहौल बड़ा भावुक था। हज़ूर अनवर अपने हाथ उठाकर उनके सलाम का जवाब दे रहे थे। हर तरफ से जोशीले नारे लग रहे थे। आगे कुछ दूरी पर बच्चियां विदाई की दुआ पढ़ रही थीं। बाद में हज़ूर अनवर उनके पास तशरीफ ले गए। फिर वहां से उस हिस्से की ओर बढ़े जहां मर्द खड़े थे और जोरदार नारे लगा रहे थे। हज़ूर अनवर अपने हाथ उठाकर उनके नारों और सलाम का जवाब दे रहे थे। एक अफ्रीकी दोस्त जोश में ऊँची आवाज में नारे लगा रहे थे। हज़ूर अनवर उस दोस्त के पास कुछ देर के लिए रुके और पूछा, "घानीन हो?" तो उन्होंने सिर हिलाकर इशारा किया कि वह घानीन हैं।

अमेरिका के मुरब्बी सिलसिला मुसव्विर अहमद साहब अपने नवजात बेटे को लेकर खड़े थे। हज़ूर अनवर ने बच्चे को प्यार किया और तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य भी दिया।

हज़ूर अनवर लगभग दस मिनट तक अपने मुहिब्बान के बीच मौजूद रहे। इस दौरान हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला ने डॉक्टर तनवीर अहमद साहब से कुछ मसलों पर बातचीत की। डॉक्टर तनवीर अहमद साहब काफिले के साथ डॉक्टर की ड्यूटी पर थे।

ग्यारह बजकर दस मिनट पर हज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और सबको सलाम कहा और काफिला शिकागो इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवाना हुआ।

बारह बजकर पांच मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला शिकागो एयरपोर्ट पर पहुंचे और एक प्राइवेट लाउंज में तशरीफ ले गए।

जमात-ए-अहमदिया अमेरिका ने शिकागो से डलास तक की यात्रा के लिए अमेरिकन एयरलाइंस के एक चार्टर्ड विमान ERJ 175 का इंतेजाम किया था। इस विमान में 76 सीटें थीं। यह विमान लाउंज के सामने कुछ कदमों की दूरी पर पार्क किया गया था। हज़ूर अनवर की आमद से पहले यात्रा करने वाले सभी लोगों का सामान विमान में लोड किया जा चुका था। इस विमान में 69 लोगों ने यात्रा की।

हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़, हज़रत बेगम साहिबा और काफिले के सदस्यों के अलावा, इस विमान में यात्रा करने वालों में अमीर साहिब जअमात अहमदिया अमेरिका, साहिबज़ादा मिर्ज़ा मघ़फूर अहमद साहिब, मोहतरमा अम्तुल मुसव्विर साहिबा (अमीर साहिब अमेरिका की पत्नी), मोहतरमा नक़ाशा अहमद साहिबा, उप-अमीरों में से डॉक्टर हमीदुद्दीन साहिब, डॉक्टर नदीम रहमतुल्लाह साहिब, फ़लाहुद्दीन शम्स साहिब, वसीम मलिक साहिब और अज़हर हनीफ अमीर और मुअल्लिम इंचार्ज) शामिल थे।

इसके अतिरिक्त, मदील अब्दुल्लाह साहिब (सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया अमेरिका), नेशनल जनरल सेक्रेटरी मुख्तार मलही साहिब, फैजान अब्दुल्लाह साहिब (चेयरमैन मेडिकल एसोसिएशन अमेरिका), मुनअम नईम साहिब (चेयरमैन ह्यूमैनिटी फर्स्ट अमेरिका), शरीफ औदा साहिब (अमीर जअमात कबाबीर), और डॉक्टर तनवीर अहमद साहिब (ड्यूटी डॉक्टर) भी साथ शामिल थे।

इसके अतिरिक्त विभिन्न जमाअतों के सदरान, मुरब्बियान, नेशनल आमला के विभिन्न सेक्रेटरी और अन्य जमाती अधिकारी भी इस यात्रा का हिस्सा थे।

अमेरिकन एयरलाइंस के एरिक एडुकियो इस यात्रा में कोऑर्डिनेटर के तौर पर शामिल थे।

जो बोर्डिंग पास प्रदान किया गया, उस पर KHILAFAT FLIGHT 2022 लिखा हुआ था। फ्लाइट का नंबर KF-2022 था। बोर्डिंग कार्ड के एक तरफ ये शब्द दर्ज थे।

AHMADIYYA MUSLIM COMMUNITY USA 1001920-2020 CENTENNIAL KHILAFAT FLIGHT 2022 IN THE COMPANY OF HAZRAT MIRZA MASROOR AHMAD KHALIFATUL MASIH V aba

विमान में सवार होने से पहले, सभी यात्री विमान के सामने खड़े थे। जब हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ तशरीफ लाए, तो सभी ने अपने प्यारे आका के साथ ग्रुप फ़ोटो खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। MTA ने इन सभी दृश्यों को फ़िल्माया।

दोपहर 12 बजकर 50 मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला विमान में सवार हुए।

दोपहर 12 बजकर 58 मिनट पर विमान शिकागो के O'Hare इंटरनेशनल एयरपोर्ट से डलास के लिए रवाना हुआ। करीब दो घंटे के सफर के बाद, 2 बजकर 55 मिनट पर विमान डलास के इंटरनेशनल FORT WORTH एयरपोर्ट पर उतरा और टैक्सी करते हुए एक ऐसे एग्जिट गेट पर पार्क हुआ, जहाँ से बाहर जाने का रास्ता बहुत ही छोटा था और पास ही में गाड़ियाँ खड़ी थीं।

डलास एयरपोर्ट पर आगमन जैसे ही हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ लाए, डलास जअमात के सदर खालिद रहीम शेख साहिब, डलास के मुअल्लिम ज़हीर अहमद बाजवा साहिब, और FORT WORTH जअमात के सदर सईद चौधरी साहिब ने हज़ूर अनवर का स्वागत किया। दोपहर 3 बजकर 10 मिनट पर एयरपोर्ट से डलास जअमात के केंद्र "मस्जिद बैतुल इकराम" के लिए रवाना हुए। पुलिस की गाड़ियाँ और कई मोटरसाइकिलों ने काफिले का एस्कॉर्ट किया और रास्ता साफ़ किया।

मस्जिद बैतुल इकराम में आगमन

करीब 40 मिनट की यात्रा के बाद, हज़ूर अनवर अय्यदुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का डलास जअमात के केंद्र में आगमन हुआ।

अपने प्यारे आका के स्वागत और हज़ूर अनवर के मुबारक चेहरे की एक झलक पाने के लिए, डलास जअमात और अमेरिका की दूसरी विभिन्न जमाअतों और क्षेत्रों से हज़ूर अनवर के आशिक़ सुबह से ही "मस्जिद बैतुल इकराम" पहुंचने लगे थे। सैकड़ों की संख्या में आए हुए मर्द, औरतें, बच्चे और बुज़ुर्ग, जो कि एक हज़ार से ज़्यादा थे, अपने आका के आगमन का इंतजार कर रहे थे और दीदार के लिए बेताब थे।

डलास (DALLAS) की स्थानीय जअमात के अलावा, ये आशिक़ ऑस्टिन, ह्यूस्टन, फोर्ट वर्थ, क्वींस, जॉर्जिया, मैरीलैंड, तुलसा, नॉर्थ वर्जीनिया, सैन जोस, सैन डिएगो, साउथ वर्जीनिया, बे-प्वाइंट, सेंट्रल जर्सी, लहीघ, रिचमंडविले, नॉर्थ जर्सी, ओशकोश, पोर्टलैंड, ब्रुकलिन, बफ़ेलो, शार्लोट, मिलवॉकी, यॉर्क, बोस्टन, शिकागो, डेट्रॉयट, कैनसस सिटी, लॉन्ग आइलैंड, फिलाडेल्फिया, पिट्सबर्ग, सैक्रामेंटो, अल्बामा, अल्बानी, बाल्टीमोर, क्लीवलैंड, हवाई, मियामी, फीनिक्स, सिराक्यूज़, विलिंगबोरो और टक्सन की जमाअतों से आए थे। कुछ जमाअतों से आए लोग अपने प्यारे आका के स्वागत के लिए लंबी और मुश्किल दूरी तय करके पहुंचे थे। मैरीलैंड से आने वालों ने 1367 मील, लॉस एंजिल्स से 1433 मील, क्वींस से 1578 मील, और सिएटल से आने वाले 2095 मील का लंबा सफर तय किया था ताकि वे अपने प्यारे आका के दीदार और स्वागत के लिए डलास पहुंच सकें।

इन मर्दों और औरतों में बड़ी संखया ऐसे लोगों की थी जिन्होंने अपनी ज़िंदगी में पहली बार अपने आका का दीदार करना था। उनका हर एक पल बेताबी से गुज़र रहा था। आख़िर वह मुबारक और यादगार लम्हा आ ही गया जब ठीक 3 बजकर 50 मिनट पर हज़ूर अनवर की गाड़ी बाहरी गेट से अंदर दाखिल हुई। जैसे ही हज़ूर अनवर गाड़ी से बाहर तशरीफ लाए, डलास जअमात के उपाध्यक्ष, खालिद किरक साहिब ने जअमात की आमला के साथ मिलकर हज़ूर अनवर को खुशामदीद कहा। दूसरी तरफ, लोग लगातार वालेहाना नारे लगा रहे थे, और हर तरफ़ से "अस्सलामो अलैकुम हज़ूर", "इन्नी मआका या मसरूर" की आवाज़ें गूंज रही थीं। हज़ूर अनवर ने हाथ उठाकर सबको सलाम किया, और दूसरी तरफ़ लोगों के हाथ भी सलाम के लिए उठ गए। हर कोई शर्फ़-ए-दीदार से नवाज़ा जा रहा था। बहुतों की आंखों में आंसू थे। औरतें और बच्चियां भी शर्फ़-ए-दीदार पा रही थीं और अपने हाथ हिलाते हुए अपने आका को खुशामदीद कह रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह डलास (DALLAS) का पहला दौरा था। आज डलास की सरज़मीन भी उन खुशक़िस्मत जगहों में शामिल हो गई जहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम पड़े हैं। अब अल्लाह के फज़ल से यहां भी तरक़्क़ियों के नए रास्ते खुलेंगे, और इन शा अल्लाह कामयाबियों और फतूहात के एक नए दौर की शुरुआत होगी।

हज़ूर अनवर के क़याम का इंतज़ाम "मस्जिद बैतुल इकराम" के बाहरी अहाते में बने गेस्ट हाउस में किया गया था। हज़ूर अनवर, जअमात के अज़ादारों के बीच से गुज़रते हुए अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

मस्जिद बैतुल इकराम में आगमन

हज़ूर अनवर ने 5 बजकर 15 मिनट पर "मस्जिद बैतुल इकराम" में तशरीफ लाकर ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें एक साथ पढ़ाईं। नमाज़ के बाद, अपनी रिहाइशगाह पर जाते वक्त, हज़ूर अनवर मस्जिद के किचन में तशरीफ लाए, जो इस समय लंगरखाना के तौर पर काम कर रहा था, और जहां लोगों के लिए खाना तैयार हो रहा था।

हज़ूर अनवर ने इंतेज़ामिया से खाने और उसकी मिक़दार के बारे में पूछा, और फ़रमाया कि जो बर्तन आप खाना पकाने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं, वे छोटे साइज के हैं। इंतेज़ामिया ने बताया कि वे एक हज़ार लोगों का खाना तैयार कर सकते हैं। उस वक्त शाम का खाना तैयार किया जा रहा था। जायज़ा लेने के बाद, हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

मस्जिद बैतुल इकराम और उससे जुड़े ऑफिस ब्लॉक और हॉल को रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया गया है, और बाहरी अहाते में भी पेड़ों को रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया गया है। हज़ूर अनवर की रिहाइशगाह पर भी रोशनी की गई है। जैसे-जैसे दिन ढलता है, जअमात का यह केंद्र, जो चार एकड़ के रकबे में फैला हुआ है, रोशनी में नहाकर बहुत ही खूबसूरत नज़ारा पेश करता है। जअमात का यह केंद्र मेन हाईवे पर स्थित है, जहां से हजारों मुसाफिर गुज़रते हैं और इस खूबसूरत दृश्य का नज़ारा करते हैं।

हज़ूर अनवर ने रात 8:30 बजे "मस्जिद बैतुल इकराम" में तशरीफ लाकर मग़रिब और ईशा की नमाज़ें एक साथ पढ़ाईं। नमाज़ के बाद, हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह 6:10 बजे मस्जिद बैतुल इकराम, डलास तशरीफ़ लाए और नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई। नमाज़ के बाद हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर वापस तशरीफ़ ले गए।

सुबह के वक्त, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने डाक का मुआयना किया। मुख़्तलिफ़ देशों से आई फ़ैक्स, ईमेल्स और रिपोर्ट्स को देखने के बाद हिदायतें दीं। अमेरिका से भी रोज़ाना जअमात के अफ़राद के ख़ुतूत (चिट्ठियाँ) वसूल होते हैं, जिन्हें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मुआयना करते और हिदायतें देते हैं।

फैमिली मुलाकातें

कार्यक्रम के मुताबिक, सुबह 11:10 बजे हज़ूर अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फैमिली मुलाकातों का सिलसिला शुरू हुआ। आज सुबह के इस सेशन में 31 परिवारों के 119 लोगों ने हज़ूर अनवर से मुलाकात की। सभी परिवारों को हज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें खिंचवाने का भी शरफ़ हासिल हुआ। हज़ूर अनवर ने तालीम हासिल करने वाले तलबा और तालिबात (छात्रों) को क़लम (पेन) तोहफ़े में दिए और छोटे बच्चों को चॉकलेट्स दीं। मुलाकात करने वाले ये परिवार डलास की लोकल जअमात के अलावा, तुलसा, लॉस एंजेल्स, ऑरलैंडो, ऑस्टिन, पोर्टलैंड, सैन डिएगो, फोर्ट वर्थ, जॉर्जिया, फिलाडेल्फिया, और ह्यूस्टन की जमाअतों से थे।

आज भी कुछ परिवार लंबी दूरी तय करके मुलाकात के लिए पहुंचे थे। ऑरलैंडो से आने वाले परिवारों ने 1106 मील, सैन डिएगो से 1979 मील, लॉस एंजेल्स से 1433 मील, और फिलाडेल्फिया से 1473 मील का सफर तय किया था। सभी ने अपने दिल को सुकून पाते हुए मुलाकात से वापस लौटे। बिमारों ने अपनी सेहत के लिए दुआ की दरख्वास्त की, बच्चों ने अपनी तालीम और इम्तिहान में कामयाबी के लिए दुआ मांगी, और जिन लोगों को परेशानियाँ थीं, उन्होंने अपनी मुश्किलों के हल के लिए दुआ की गुजारिश की। हर कोई दुआओं का ख़ज़ाना लेकर बाहर निकला और अपनी मुराद पाकर वापस गया।

मस्जिद बैतुल इकराम की यादगार तख्ती की अनावरण

मुलाकातों के इस प्रोग्राम के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की दीवार में लगी तख्ती का अनावरण किया और दुआ कराई। इसके बाद, 1:45 बजे हज़ूर अनवर मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ़ लाए और नमाज़-ए-ज़ुहर और अस्र जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ के बाद हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर वापस तशरीफ़ ले गए।

फैमिली मुलाकातें

शाम के प्रोग्राम के अनुसार, 6:15 बजे हज़ूर अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और मुलाकातों का सिलसिला शुरू हुआ। इस सत्र में 32 परिवारों के 129 लोग मुलाकात करने आए। सभी ने हज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें खिंचवाईं। हज़ूर अनवर ने छात्रों को क़लम और छोटे बच्चों को चॉकलेट दीं। मुलाकात करने वाले ये परिवार सिएटल, डलास, फोर्ट वर्थ, ह्यूस्टन, ऑस्टिन, जॉर्जिया, सैन डिएगो और बे पॉइंट से आए थे।

कुछ परिवार लंबी दूरी तय करके मुलाकात के लिए आए थे। जॉर्जिया से 798 मील, सैन डिएगो से 1379 मील, बे पॉइंट से 1712 मील, और सिएटल से 2095 मील का सफर तय कर आए थे। ज्यादातर लोग अपनी ज़िंदगी में पहली बार अपने आका से मुलाकात कर रहे थे। उनके जज़्बात और खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

जमाअत के लोगों के अनुभव

फोर्ट वर्थ से आए आमिर महमूद नागी ने कहा कि मुलाकात से पहले हमें डर था कि हम हज़ूर के सामने बात नहीं कर पाएंगे, लेकिन अंदर जाने पर इतनी तसल्ली मिली कि हम हज़ूर से खुलकर बात कर सके।

जॉर्जिया से आए काशिफ महमूद बट ने कहा कि हज़ूर अनवर ने मुझे नसीहत करते हुए कहा, "देखो, अल्लाह ने तुम्हें इस दुनिया में माल (धन) से नवाज़ा है, अब वक़्त आ गया है कि तुम इसे अल्लाह की राह में ख़र्च करो।

सैन डिएगो से नासिर रज़ी ने कहा कि हज़ूर अनवर ने फ़ौरन मेरा नाम जान लिया और मेरे परिवार को भी पहचान लिया। मुझे बड़ी हैरानी हुई कि हज़ूर को यह भी मालूम था कि मेरे परिवार के लोग कहाँ रहते हैं।

हज़ूर अनवर की बारबेक्यू प्रोग्राम में शिरकत

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम रात 8 बजकर 20 मिनट तक जारी रहा। आज शाम जअमात डैलस (DALLAS) ने अपने स्थानिय सदस्यों और दूसरी विभिन्न जमाअतों और स्थानों से आए हुए सभी सदस्यों और अन्य मेहमानों के लिए बारबिक्यू (BBQ) का आयोजन किया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ समय के लिए मौजूद लोगों के बीच तशरीफ लाए और उनसे बातचीत की। बारबिक्यू के विभिन्न हिस्सों से कुछ लेकर खुद भी खाया और उसे बरकत दी। कुछ देर के कयाम के बाद हज़ूर अनवर वापस लौट गए। रास्ते में एक जगह अनवर महमूद खान साहब (नेशनल सेक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद) और अमजद महमूद खान साहब (नेशनल सेक्रेटरी उमूर-ए-खारिजा) खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपनी कृपा से अनवर महमूद खान साहब से पूछा कि ज़ायन (ZION) में शनिवार की शाम की तकरीब के बाद मेहमानों ने नुमाइश देखी है? कितने लोगों ने नुमाइश देखी? इस पर अनवर महमूद खान साहब ने बताया कि 200 से ज्यादा ग़ैर-मुस्लिम मेहमानों ने तकरीब के बाद नुमाइश देखी और सभी बहुत प्रभावित होकर गए। इसी तरह 1100 से ज्यादा अहमदी सदस्यों ने नुमाइश का दौरा किया। अमजद महमूद खान साहब ने बताया कि शिकागो के रहने वाले एक अरबी दोस्त निज़ाम खतीब साहब, जो सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं, उन्होंने नुमाइश देखने के बाद कहा कि आपने जो कुछ पेश किया, वह सब बहुत अच्छा, सही और सटीक है। लेकिन एक बात यह भी है कि हज़रत मसीह मऊद अलैहिस्सलाम ने सिर्फ़ जमात-ए-अहमदिया का ही नहीं बल्कि पैगंबर-ए- मुहम्मद, इस्लाम और उम्मत-ए-मुस्लिम का भी बचाव किया है और इस्लाम के लिए एक महान सेवा की है।

इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया : यही बात तो मैंने कही है। डोवी पैगंबर मुहम्मद के खिलाफ बदज़बानी करता था और इस्लाम को मिटाने का ऐलान किया था, तब हज़रत मसीह मऊद अलैहिस्सलाम इस्लाम के बचाव में खड़े हुए और उसे चुनौती दी।

इसके बाद हज़ूर अनवर ने इंतेज़ामिया से पूछा कि आप ने यहां हर तरफ़ रोशनी की है। क्या इससे पड़ोसियों को कोई समस्या नहीं है? इस पर बताया गया कि अल्लाह के फज़ल से यहां सब ठीक है। केवल मस्जिद की तामीर के दौरान एक पड़ोसी ने शिकायत की थी कि शोर होता है। इस पर हज़ूर ने फ़रमाया: तामीर के दौरान तो शोर होता ही है।

मस्जिद के बाहरी हिस्से में एक बड़े साइज का जनरेटर लगाया गया था। हज़ूर अनवर ने इसके बारे में पूछा। इंतेज़ामिया ने बताया कि यह बैकअप के लिए रखा गया है, ताकि अगर किसी कारण से बिजली चली जाती है तो यह खुद-ब-खुद चालू हो जाएगा।

इसके बाद रात 8 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ लाए और मगरिब और इशा की नमाज़ें अदा कीं। नमाज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहाइशगाह पर लौट गए।

अमेरिका भर से आए जमाअत के सदस्यों की मुलाकातें, मस्जिद बैतुल इकराम का निरीक्षण, और यादगार पौधा लगाने की रस्म

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ लाकर नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई। नमाज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

सुबह के समय हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनियाभर से प्राप्त हुई डाक, फैक्स, ईमेल और रिपोर्ट्स को देखा और हिदायतें प्रदान कीं। अमेरिका की विभिन्न स्थानीय जमाअतों से भी हज़ूर की सेवा में बड़ी संख्या में पत्र आए, जिन्हें हज़ूर मुआइना करते और अपनी हिदायतें देते हैं।

फैमिली मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार सुबह 11 बजे हज़ूर-ए-अनवर अपने दफ़्तर में तशरीफ लाए और फैमिली मुलाकातों का सिलसिला शुरू हुआ। इस प्रोग्राम में 26 परिवारों के 126 सदस्यों को अपने प्यारे आका से मिलने सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने रहमत के तौर पर छात्रों और छात्राओं को पेन दिए, और छोटे बच्चों को चॉकलेट से नवाज़ा।

इन मुलाकात करने वालों में Dallas की स्थानिय जमाअत के अलावा 14 अन्य जमाअतों के सदस्य भी शामिल थे। कई परिवार लंबे और कठिन सफर तय करके हाज़िर हुए थे। जैसे कि Maryland से आए परिवार 1367 मील, Silicon Valley से 1701 मील, और Sacramento से आए परिवार 1725 मील का सफर तय कर पहुंचे थे। इनमें से बड़ी संख्या में लोग पहली बार हज़ूर-ए-अनवर के मिल रहे थे और इस तरह दीदार से लाभान्वित हो रहे थे।

जमाअत के सदस्यों के अनुभव

Seattle जमाअत से 2095 मील का सफर तय करके आए नवेद इक़बाल साहब ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा, "मैं 40 साल बाद खलीफ़ातुल मसीह से मिल रहा हूं। आज मुझे रब्वा के वे बबरकत दिन याद आ गए। आज मेरी ज़िंदगी पूरी हो गई है। मैं आत्मिक रूप से स्वस्थ और तंदरुस्त महसूस कर रहा हूं।

Dallas जमाअत से आए ज़ुल्फ़िकार अहमद साहब बात करते हुए रो पड़े। उन्होंने कहा, "ज़िंदगी में पहली बार खलीफ़ातुल मसीह से मुलाकात हुई है। मुझे और क्या चाहिए,मुझे तो सब कुछ मिल गया है।

Dallas के अनीक राजा साहब ने बताया, "हज़ूर-ए-अनवर ने मुझे अंगूठी दी और मुझे स्थानीय मुरब्बी के करीब रहने की हिदायत दी। अपने आका से मिलकर मेरे दिल को जो सुकून और संतोसश मिला है, उसे मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता।

Houston जमाअत से आईं मुबशिरा अख्तर साहिबा बात नहीं कर पा रही थीं, वह रोने लगीं। उन्होंने कहा, "मेरी पूरी ज़िंदगी की एक ही ख्वाहिश थी कि मैं अपने आका से मिलूं। आज अल्लाह ने मेरी ये ख्वाहिश पूरी कर दी है। मैंने हज़ूर-ए-अनवर के चेहरे में बस नूर ही नूर देखा है।

Houston से आए वासिल महमूद साहब ने कहा, "मैं सिर्फ इतना कर सका कि हज़ूर-ए-अनवर के नूरानी चेहरे को देखता रहूं। मुलाकात के दौरान मैं कुछ भी नहीं कह पाया। इसे शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है।

Silicon Valley से 1701 मील का सफर तय करके आए शमीम अहमद साहब ने बताया, "हज़ूर-ए-अनवर ने मुझे नसीहत की कि शादी में सब्र बहुत ज़रूरी है। हज़ूर ने फ़रमाया कि अपनी बीवी के साथ तीन चीजें ज़रूरी हैं : अपनी आँखें बंद रखो, अपने कान बंद रखो, और अपना मुँह बंद रखो। यह एक कामयाब शादी का राज़ है।

Dallas जमाअत के सदस्य सऊद अहमद खान साहब ने कहा, "हज़ूर-ए-अनवर ने हमें वक़्त दिया और बहुत धैर्य से हमारी हर बात सुनी और हमें मशवरा दिया। हज़ूर-ए-अनवर ने हमें अंगूठियां और चॉकलेट भी अता कीं। मेरी बेटी ने क़ुरआन-"ए-करीम मुकम्मल किया है। हज़ूर-ए-अनवर ने क़ुरआन पर दस्तख़त फ़रमाए।

Sacramento से 1725 मील का सफर तय करके आए अफ़गानी अहमदी दोस्त सैयद अब्दुलक़ादिर अहमद ने बताया, "मैं कुछ महीने पहले ही अफगानिस्तान से आया हूं। हज़ूर-ए-अनवर ने अफगानिस्तान में पीछे रह गए अहमदियों के हालात का तफसील से पूछा। हज़ूर को हमारी क़ौम और अफगानिस्तान के अहमदियों से मोहब्बत है।

Dallas के अज़हर हुसैन साहब ने कहा, "मैं यहाँ एक हफ्ते से ड्यूटी कर रहा हूं, लेकिन आज मेरी ज़िंदगी का सबसे बड़ा दिन था कि मैं अपने प्यारे आका से मिला। पिछली मुलाकात में हज़ूर ने फ़रमाया था कि बच्चा पैदा करने का समय आ गया है, और उसके कुछ दिन बाद हमें पता चला कि मेरी बीवी उम्मीद से है। अब वही बेटी हमारे साथ मुलाकात में शामिल थी।

मस्जिद बैतुल इकराम का निरीक्षण और यादगार पौधा लगाना

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 10 मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ लाए और मस्जिद बैतुल इकराम और उससे जुड़े दफ़्तरों और हॉल का निरीक्षण किया।

हमारी यह मस्जिद Allen के इलाके में स्थित है। Allen शहर के मेयर Ken Fulk साहब हज़ूर-ए-अनवर से मिलने के लिए आए हुए थे और प्रशासन के साथ एक तरफ खड़े थे। उन्होंने हज़ूर-ए-अनवर को शहर में आने पर स्वागत किया और बताया कि वह विशेष रूप से हज़ूर से मिलने के लिए आए हैं। संभवतः किसी अन्य कार्यक्रम के कारण वे मस्जिद की रस्म में शामिल नहीं हो पाएंगे और अपनी जगह किसी और को भेजेंगे। हज़ूर-ए-अनवर ने उनका धन्यवाद किया कि वह विशेषता पर मिलने आए हैं।

इसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सबसे पहले मल्टी-पर्पस दो हॉलों का निरीक्षण किया। 1996 में Dallas जमाअत की पहली मस्जिद के लिए चार एकड़ का प्लॉट 96 हजार डॉलर में खरीदा गया था। 2002 की शुरुआत में इन दो हॉलों का निर्माण शुरू हुआ, जो उसी वर्ष पूरा हो गया। इन दिनों हॉलों के निर्माण पर 6 लाख 60 हजार डॉलर खर्च हुआ था। निरीक्षण के दौरान प्रशासन ने बताया कि ये दोनों हॉल क़िबला की दिशा में बनाए गए हैं और

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 12 September 2024 Issue No. 37

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

मस्जिद के निर्माण तक लगभग 19 साल तक ये हॉल मर्दों और औरतों के लिए मस्जिद के रूप में इस्तेमाल होते रहे। अब यह हॉल औरतों के लिए डाइनिंग हॉल के रूप में इस्तेमाल हो रहे हैं। इन दोनों हॉलों का क्षेत्रफल पाँच हजार वर्ग फुट है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी परिसर में एक पौधा लगाया। फिर हज़ूर-ए-अनवर महिलाओं वाले हिस्से में तशरीफ ले गए और नमाज़ हॉल, लजना के दफ़्तर, किचन और बच्चों के लिए विशेष जगह का निरीक्षण किया। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर मर्दों के हिस्से में गए और विभिन्न दफ़्तरों और लाइब्रेरी का निरीक्षण किया। मर्दों और औरतों के हॉलों में 450 नमाज़ियों की जगह है। इसके अलावा दोनों लॉबीज़ में 250 नमाज़ियों की भी जगह उपलब्ध है।

मस्जिद, मुरब्बी हाउस, गेस्ट हाउस, हॉल, दफ़्तर और किचन आदि सब मिलाकर कुल निर्मित क्षेत्रफल लगभग 19 हजार वर्ग फुट है। इस पूरे प्रोजेक्ट पर कुल 4.8 मिलियन डॉलर का खर्च हुआ है।

.. शेष

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

बंदों की ख़िदमत में हिस्सा नहीं लेतीं, उसके हाथ पांव ख़ुदा तआला के बंदों की ख़िदमत में हिस्सा नहीं लेते तो वह यह नहीं कह सकता कि मैंने अपनी सारी जायदाद देकर अपने फ़र्ज़ को अदा कर दिया है। ये चीज़ मंतिक़ तो कहलाएगी लेकिन दीन नहीं कहलाएगा। दीन का तक़ाज़ा पूरा करने के लिए ज़रूरी होगा कि वह अपने सारे जिस्म को ख़ुदा तआला के बंदों की ख़िदमत के लिए इस्तमाल करे। अहादीस में आता है कि क़ियामत के दिन जब समस्त इन्सान ख़ुदा तआला के सामने पेश होंगे तो वे बाअज़ लोगों से कहेगा कि हे बंदो! मैं भूखा था तुमने मुझे खाना खिलाया। मैं प्यासा था तुमने मुझे पानी पिलाया। मैं नंगा था तुमने मुझे कपड़े पहनाए। मैं बीमार हुआ तुमने मेरी देखभाल की, इसलिए जाओ और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जाओ। वे बंदे कहेंगे तौबा तौबा भला हमारी क्या ताक़त थी कि हम तुझे खाना खिलाते या पानी पिलाते या कपड़े पहनाते या बीमारी पर तेरी इयादत करते तू तो उन समस्त बातों से पाक है। वह फ़रमाएगा यह दरुस्त है लेकिन जब मेरा एक अदना से अदना बंदा तुम्हारे पास आया और वह भूखा था तो तुमने उसे खाना खिलाया तो गोया मुझे ही खाना खिलाया। और इसी तरह जब मेरा एक अदना से अदना बंदा तुम्हारे पास आया और वह प्यासा था और तुमने उसे पानी पिलाया तो गोया तुमने मुझे ही पानी पिलाया। इसी तरह जब तुमने एक नंगे को कपड़ा पहनाया या एक बिमार की देखभाल की तो तुमने एक बंदे को कपड़ा नहीं पहनाया या एक बंदे की देखभाल नहीं की बल्कि दरहक़ीक़त तुमने मुझे कपड़ा पहनाया और तुमने मेरी देखभाल की। इसलिए जाओ और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उद्देश्य مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ में इस बात की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई है कि एक मोमिन को अल्लाह तआला की तरफ़ से जिस क़दर ताक़तें और क़ुव्वतें मिली हुई हैं उस पर फ़र्ज़ है कि वह अपनी हर ताक़त को बनीनौ इन्सान की भलाई के लिए खर्च करे और केवल इस बात पर ख़ुश न हो जाए कि उस ने रुपया देदिया था या नमाज़ पढ़ ली थी या रोज़ा रख लिया था।

देखो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक दफ़ा माली क़ुर्बानी की तहरीक की तो एक सहाबी जिनके पास और कुछ नहीं था वह जो की दो मुट्ठीयाँ लाए और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश कर दें मुनाफ़िक़ों ने इस बात को देखा तो वे हँसे और कहने लगे लो अब दुनिया जो की इन दो मुट्ठियों से फ़तह होगी, हालाँकि अगर उन की आँख खुली होती तो वे समझते कि ये जो की दो मुट्ठीयाँ नहीं थीं बल्कि इस्लाम की मुहब्बत में बेताब होने वाले एक दिल के ख़ून के दो क़तरे थे जो उस ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किए और दुनिया दिल के ख़ून के क़तरों से ही फ़तह हुआ करती है, दुनियावी सामानों से नहीं। अतः पूर्ण ईमान की निशानी यह है कि जो कुछ तुम घरों में खाते हो और जो कुछ कमाते हो और जो कुछ पहनते हो और जो कुछ ख़र्च करते हो, उस का एक हिस्सा ख़ुदा तआला की राह में भी दो और अपनी हर ताक़त बनीनौ इन्सान की भलाई और उनकी बहबूदी के लिए खर्च करो।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 52 प्रकाशन कादियान 2010)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad